रसविलास ।

श्रीदेवकविकृत ।

जिसमें

जातिभेद देशभेद इत्यादि से समस्त नायिकाओं का वर्णन है ।

यह ग्रन्थ सीहोरनिवासी कवि गोविन्द गीला भाई की सहायता से हमको प्राप्त हुआ है ।

काशी ।

भारतजीवन यन्त्रालय में मुद्रित हुई ।

सन् १९०० ई० ।

प्रथम बार १०००]   [मूल्य ।)

अथ रसबिलास देवकबिकृत।

सवैया।

पायनि नूपर मंजु बजैं कटि किङ्किनि की धुनि की मधुराई। साँवरे अंग लसै पट-पीत हिये हुलसै बनमाल सुहाई॥ माथे किरीट बड़े दृग चञ्चल मन्द हँसी मुख चन्द जुन्हाई। जै जगमन्दिर-दीपक सुन्दर श्रीब्रजदूलह देव सुहाई॥ १॥

दोहा।

युक्ति सराही मुक्ति हित मुक्ति भुक्ति को धाम।
युक्ति मुक्ति अरु भुक्ति को मूल सु कहिये काम॥
बिना काम पूरन भये लगे परमपद क्षुद्र।
रमनी राका-ससिमुखी पूरै कामसमुद्र॥ ३॥
तातें त्रिभुवन सुर असुर नर पसु कीट पतंग।
रच्छस जच्छ पिसाच अहि सुखी सबै तिय संग॥
कोटि कोटि बिधि कामना तिनके कोटिन भेव।
तिनमें माया मानुषी बरनि कहैं कवि देव॥५॥

अथ कामिनी भेद दोहा ।

सो नारी कहुँ नागरी पुरबासिनि ग्रामीन ।
बनसयना अरु पथिक तिय षट बिधि कहत प्रबीन॥

नागरी वर्णन दोहा ।

देवल रावल राजपुर नागरि तरुनि निवास ।
तिनके लच्छन भेद सब बरनत जातबिलास ॥

देवल नागरी दोहा ।

देवल देवी नागरी दूजी पूजनहारि ।
द्वारपालिका तीसरी बरनहु त्रिविधि बिचारि ॥

कबित्त ।

पूरन सरद ससिमण्डल बिसद जोति मण्डल बितानि में अखण्ड गुन गाहिनी । अमल अमोल मनि रतननि रच्यो महा सुन्दर सु मन्दिर अमन्द सुख चाहिनी ॥ आठहू पहर कर आठौं आठौ सिद्धि लिये सेवक मं सेवक सहाइ सदा दाहिनी । रूप रस एवी महादेवी देव देवनि की सिंहासन बैठी सोहैं सोहैं सिंहबाहिनी॥

पूजन कबित्त ।

केसरि कपूर मृगमद चोवा चन्दन रु रचि रचि पहुप चढ़ावति महानी के । धूप दीप भो-

जन समीपही निवेदन कै वेदन जताइ जपै नाम बरदानी के ॥ जानत न जीको तन जीकी कोऊ देव कहै वाहि रट पीकी भट बाहिर कहानी के। कहौ जु दुराइ जदुराइ बर पाइबे कों रुक्मिनि रानी पग पूजत भवानी के ॥ १० ॥

द्वारपालिका कवित्त।

जगमगें जोतिन के मोतिन के हार हिये उलहत भार मृदु मालती की मालिका। केसर की खौर देव पौरि पर मोहनी सी देव मुनि मोहै विधुबदन बिसालिका ॥ नवला चतुर नवला सी लिये हाथ अबलानि जानि देति जब देति करतालिका। एवी अदभुत वह कैसी है है देवी जाके मन्दिर के द्वार सोहै ऐसी द्वारपालिका ॥

देवल नागरी, रावल नागरी दोहा।

रावल नागरि पाँच बिधि पहलें राजकुवारि ।
तासु धाय दूजी सखी दासी कहूँ सम्हारि ॥१२॥

राजकुमारी वर्णन दोहा।

ठकुराइन सब नगर की सुख सम्पति की मूल ।
गुन गरबीली मानिनी जाको पति अनुकूल॥१३॥

कबित्त।

पावरिन तै पावड़े परे हैं पुर पौरि लग धाम धाम धूपन के धूम धुनियत हैं। कस्तूरी अगर सार चोवा-रस घनसार दीपक हजार तें अँधार लुनियत हैं॥ मधुर मृदंग राग रंग के तरंगनि मैं अंग अंग गोपिन के गुन गुनियत हैं। देव सुख-साजैं महाराज ब्रजराज आज राधा जू के सदन सिधारे सुनियत हैं॥ १४॥

मंजुल अखण्ड खण्ड सातयें महल महा मण्डल चौवारो चण्ड मण्डल के चोटहीं। भीतर हू लालन के जालन बिसाल जोति बाहर जुन्हाई जगै जोतिन के जोटहीं॥ बरनत बानी चौंर ढारत भवानी कर जोरै रमारानी ठाढ़ो रमन के ओटहीं। देव दिगपालनि की देवी सुखदाइनि तें राधा ठकुराइनि के पाइनि पलोटहीं॥१५॥

राजनगर वर्णन दोहा।

राजनगर जे बसत जन ते राजन के मीत।
तिनकी तिय नृपसुतनि को होतीं धाइ पुनीत॥

वारे पीछें प्याइ पै स्यानी करै सिखाय ।
तिहि जानौं जननी कुंवरि ताहि बखानौं धाय॥

कवित्त ।

राई नौन वारति गुराई देखि अंगनि मैं
टुरै न दुराई पैं भुराई सों भरति है । ज्यों ज्यों
सुघराई सो न उघरत देह त्यों त्यों सुन्दर सुघर
घर घेरी ना विरति है । निठुर डिठौना दियैं
नीठि निकसन कहैं दीठि लागिबे कैं डर पीठि
दै गिरति है । जिन जिन ओर चितचोर चितवत
त्योंही तिन तिन ओर तन तोरति फिरति है॥

दोहा ।

धाइ सखी दासी नटी ग्वालि सिल्पिनी नारि ।
मालिनि नाइनि बालिका पटवा बधू बिचारि॥
सन्यासिनि भिच्छुकबधू सम्बन्धी की बाम ।
एतो होतीं दूतिका दूतपन्य अभिराम ॥ २० ॥
छल सों पैठैं राजगृह माहिं राजसुतानि ।
हिलवैं मिलवैं दम्पतिनि कहैं सँदेसो आनि ॥
रस उपजावैं परसपर नित नित नेह बढ़ाइ ।
रहैं दुहुनि चित मैं चढ़ी दूती चतुर सुभाइ॥२२॥

सवैया।

लेहु लला उठि लाईहौं बालहिँ लोक की लाजहि सौं लरि राखौ। फेरि इन्हैं सुपनैंहु न पैयतु लै अपने उर में धरि राखौ॥ देव लला अबला नवला यह चन्दकला कठुला करि राखौ। आठहु सिद्धि नवो निधि लै घर बाहर भीतरहूं भरि राखौ॥ २३॥

दूती के वाक्य वर्णन कवित्त।

कुंजनि कैं कोरे मैन केलि-रस बोरे लाल तारनि कैं खोरैं बाल आवति है नित कों। अमृत निचोरे कल बोलत निहोरै नैक सखिनि के डोरैं देव डोलै जित तित कों॥ थोरैं थोरैं जवनि बिथोरैं देत रूपरासि गोरैं गोरे मुख भोरे भोरे लेत हित को। तोरैं लेत रति-दुति मोरैं लेत मतिगति छोरैं लेत लोकलाज चोरैं लेत चित को॥ २४॥

सखी कर्म दोहा।

बन्धु विप्र कुल गुरु सुता औ गुनवन्ती कोइ।
सोई राजसुतानि की सखी सहेली होइ॥२५॥

दुहूं सुनावत दुहुन-गुन उपजावत रस भाय ।
बिरहाख्वास दिखाय पुनि दोऊ बिरह जताय ॥
दूत को उतहि उराहनौं दूत उत को संदेस ।
दुहूं मिलावन परसपर रचिदो भूषन बेस ॥२७॥
देसकाल अनुरूप बिधि करिबो सदा प्रसन्न ।
ए दस कर्म सखौनि के करे रहैं आसन्न ॥ २८ ॥
समै समै के काज पै सखी अनेक प्रकार ।
धाइ कहूँ दूती कहूं दासी कहूँ बिचार ॥ २९ ॥

अथ दसकर्म उदाहरन—सवैया ।

आई हों देखि बधू इक देव सु देखत भूली सबै सुधि मेरी । राख्यौ न रूप कछू बिधि के घर ल्याई है लूटि लुनाई की ढेरी ॥ एवौ अबै वह ऐवै ह बैस मरैंगी महा बिष बूँटि घनेरी । जे जे गनी गुनआगरि नागरि ह्वोंहिगीं वाकी चितौतहीं चेरी ॥ ३० ॥

यथा ।

देव न देखति हौं दुति दूसरी देखे हैं जा दिन तैं यदुभूप मैं । छाइ रही री वहै छबि कानन

कानन आनन ओप अनूप मैं ॥ ये अँखिया सखि-यानि तिहारिये जाइ मिलौ रसबूँद ज्यों कूप मैं । कोरि करैं अब क्यों निकसैंगी समाय गईं सुभ साँवरे रूप मैं ॥ ३१ ॥

दंपति को रस उपजाइबो कवित्त ।

त्रिबली तरंगिनि निकट नाभि ह्रद तट रोम-राजी वन घसि मुकत अन्हात हैं । नेह नगरी मैं गुनगेह उर ऊँची पौरि देव कुच कंचन के क-लस लखात हैं ॥ लोचन दलाल ललचावति ब-टोहिन कौं लाल चलि देखौ लाल मोलनि ल-हात हैं। जोबन बजार बैठ्यौ जौहरी मदन सब लोगनि कैं हीरा वाके हाथ ह्वै बिकात हैं ॥३२॥

ग्वालि गई इक ह्यां की वहाँ मग रोको सु तो मिसु कै दधिदानि को । वातो भटू वह भेटी भुजा भरि नातो निकासि कछू पहिचानि को ॥ आई निछावर कै मन-मानिक गोरस दै रस लै अधरान को । वाही दिना ते हिये में गड़ी वहै ढीठ बड़ौरी बड़ी अँखियान को ॥ ३३ ॥

अथ विरहाश्वासन कबित्त।

काहू को बङ्क चितैबे की संक न लागै कलंक बिसै किन बीसों। वा ठकुराइनि को अब देव बिरंचि रची रुचि रावरे जी सौं ॥ देहौं मिलाइ तुमैं हौं तिहारियै आन करौं बृषभानुलली सौं। बाँभन की सौं बबा की सौं मोहन मोहि गऊ की सौं गोरस को सौं ॥ ३४ ॥

नन्दकुमार इतैं उत ठाकुर राधे इतैं अतिही ठकुराइनि। देव सँयोग तिहारी दुहूँ को बन्यौ कुल सम्पति सील सुभाइनि ॥ पाइ न लागियै मेरो भटू नित चाहत हौंही लगी इन पाइनि। आज तुमैं ब्रजराज मिलाऊँगी राज करौ गृहकाज गुसाइनि ॥ ३५ ॥

अथ परस्पर दिखावन सवैया।

सील को सागर रूप-उजागरि है गुन आगरि नागरि भारो। वा बरसाने के बासिन कौं निसि बासर सोम समान समारो ॥ नागरि बैस बड़ी ठकुराइन सो सुखदाइन है जु हमारो ।

श्रीवृषभान के भौन को द्वाइ कराइहै राधिका राजकुमारी ॥ ३६ ॥

कानन कुण्डल माल गरें सँग मण्डित गोपिन के कुंवरेटा । देव गयन्द से आवत मन्द से देखि री चन्द से नन्द के बेटा ॥ काम की दूती पढ़ावत तूती चढ़ो पग जूती बनात लपेटा । पीरौ झगा पटुका बिन छोर करी कर लाल जरी सिर फेटा ॥ ३७ ॥

कवित्त ।

जब तें कुँवरकान्ह रावरी कलानिधान कान परी वाकें कहूं सुजस कहानी सी । तबही तें देव देखी देवता सी हँसति सी रीझति खीझति सी रूसति रिसानी सी ॥ छोही सी छली सी छीन लीनी सी छकी सी छिन जकी सी टकी सी लगी थकी थहरानी सी । बीधी सी बँधी सो विष-बूड़ति बिमोहित सी बैठी बाल बकति बिलोकति बिकानी सी ॥ ३८ ॥

ऐपन की ओप कुन्दन की आभा चम्पा केतकी की गाभा जोति जोतिन सों जटियत। जगरमगर होत सहज जवाहर से एतिही उजारे जब नैमक उलटियत ॥ वैसई सुढार सुकुमार अंग सुन्दरि के ललन तिहारे पास नेहखरे लटियत। देव तेऽ गोरी के बिलात गात बात लगैं ज्यों ज्यौं सीरे पानी पीरे पान से पलटियत ॥

बरुनी बघम्बर में गूदरी पलक दोऊ कोए राते बसन भगौहैं भेष रखियां। बूड़ी जलही में दिन जामिनिहू जागैं भौंहैं धूम सिर छायौ बिरहानल बिलखियां ॥ अँसुवा फटिक-माल लाल डोरे सेली पैन्हि भई हैं अकेली तजि चेली संग सखियां। दीजियै दरस देव कीजियै सँयोगिनि ये जोगिनि ह्वै बैठी हैं बियोगिनि की अँखियां ॥

दंपति को उराहनो सवैया।

तो गुन देव सुनें जब तें तब तें सुधिऊ न उन्हें उर की है। पीर नहीं पहिचानत लोग ब-

खानत बैद बिथा जुर की है। लोभ चढ़ी अति मोहन की मति मोह महागिर तें ढुरकी है॥ थोरियै बैस बिथोरी भटू ब्रजभोरी सो बातनि मैं भुरकी है॥ ४१॥

ह्यां सुधि यों बिसरी उत ह्यां पलही पल जात हैं प्रान चले जू। जो कहियै तौ कह्यौ नहिं मानत कहैंहो बिना घर कैते घले जू॥ देव दुहूं बिधि बूड़ उतैंही की रावरे बातन ये बदले जू। और उराहनौं देत बनै न कहा कहूं कान्ह भले ही भले जू॥ ४२॥

सवैया।

राधे कही है कि तैं छमियौ ब्रजनाथ किते अपराध किये मैं। कानन तान न भूलत ना खिन आंखिन रूप अनूप पिये मैं॥ आपने आके हिये मैं दुराइ दयानिधि देव बसाय लिये मैं। क्यौंही असाध बसी न कहूं पल आध अगाध तिहारे हिये मैं॥ ४३॥

जाती हौं जौ उत वे जो मिलैं कहूँ पावौ समौ कहिवे कौं ठिकानै । ह्यां की दसा तुम देखि यहै कहियो समझाइ ज्यौं वे जिय आनैं ॥ या मन की बिन पाये बिथा तिनकी कवि देव जू कौन बखानै। तोसौ हितू हितकी बिन और सुको इत को चित की गति जानै ॥ ४४ ॥

अथ दम्पति को मिलाइबौ वर्णन—सवैया ।

जा दिन ते हित जान्यौ इतैं तब तें नहि तू कहि काहू सौं बोलैं । तेरेई है रहे भाट भटू सब सौगुनौ रूप सराहत डोलैं ॥ देव इन्हैं सुख सौं सजिकै रस सौं रचिकै तजि लाज कै ओलै । राधे अहो हरि भावते कौं भरि कै भुज भेंटिये मेटि मलोलैं ॥ ४५ ॥

देव तज्यौ गुन गौरव औ गुर-लोगनि सौं छल-छिद्र करे मैं । धाय धसौ वृषभान के भौन समान के गोप सबै निदरे मैं ॥ तो हित जाय हितू हित के भई दूती के दाइनि पाइ परे मैं । लाल उन्हैं उर-माल करौ गहि डारहु बाल गुपाल गरे मैं ॥ ४६ ॥

दम्पति को भूषण रचन—सवैया।

चोवा मिलै मृग-मेद घसै घनसार सौं केसरि गारति डोलैं। देव जू फूल फुलेलन की घर-बाहर बास बगारत डोलैं॥ भूषन वेष बनाइ नये पहिराइ पुराने बिगारत डोलैं। राधे के अङ्गनिही सगरौ दिन सङ्गही सङ्ग सिँगारत डोलैं॥४७॥

अथ प्रसन्न करन—कवित्त।

भरे गुन-भार सुकुमार सरसिज-सार सोभा रूप सागर अपार गुन चाँवड़े। नख नग जाल लाल अँगुरी विधुप माल नूपर मराल ए अनूपर उनाँवड़े॥ धरिये न पाँव बलि जाँव राधे चन्द-मुखी वारौं गति मन्द पै गयन्दपति-छाँवड़े। छितहि छुवत देव दूनी होति झलक पलक ह्वजे ठाढ़ी हौं पलक करौं पाँवड़े॥ ४८॥

सखिन को सुख सुनै सौतिनि को महादुख होत गुरजननि के गुन को गरूर है। देव कहै लाख २ भाँति अभिलाष पूरि पी के उर उमगति प्रेमरस-पूर है॥ तेरो कल बोल कल भा-

घन को स्वाति बूँद जहाँ जाइ पर्यो तहाँ तैसोई समूर है । व्यालमुख विष ज्यौं पियूष ज्यौं पपीहामुख सीपमुख मोती कदली मुख कपूर है ॥

दोहा ।

थाइ सखी कै दूतिका कै दासी अभिराम ।
बासौं दम्पति हित करैं सिद्धा ताको नाम॥५०॥

सवैया ।

वारी ही वैस बड़ी चतुरी हो बड़े गुन देव बड़ोये बनाई। सुन्दरि हौ सुघरी हो सलोनी हो सीलभरी रसरूप सनाई॥ राज-बहू बलि राज-कुमारि अहो सुकमारि न मानो मनाई। नैसका नाह के नेह बिना चकचूर ह्वै जैहै सबै चिकनाई ॥ ५१ ॥

अथ दासी वर्णन—दोहा ।

दम्पति आयुस करन कौं सनमुखि रहति चितौति।
दासी नागरि सेवकनि ,कहूँ ह्वै रही सौति॥५२॥

सवैया ।

दम्पति एकही सेज परे पग पींडुरी दाबि दुहूँ कौं रिझावति। आपने ऊँचे उठौं हैं कठोर

उरोजन कों मलैं एड़ी मिलावति ॥ भौहैं अमेंठि रहैं ठकुराइनि ठाकुर कै उर काम जगावति । लौंड़ी अनोखी लड़ावति लाल की पाइ पलोटै कि चोटैं चलावति ॥ ५३ ॥

दोहा ।

देवल रावल नागरी इहि बिधि बरनौं देव ।
राजनगर नागरि कहौं न्यारे लच्छन भेव ॥५४॥

इति श्रीरसविलासे कविदेवकृते देवलरावलनागरीवर्णनम् नाम प्रथमो विलास: ॥ १ ॥

दोहा ।

रानी राधा हरि सुमिरि बानी देव प्रकास ।
रसविलास नृप नागरी बरनत प्रथम बिलास॥१॥
राजनगर नागरि बिबिधि बरनत सुकवि सँभारि।
एक हटवई की बहू दूषी गनिका नारि ॥ २ ॥
पुनि अनेक करि हटवइनि कही अनेक प्रकार ।
गनिका गनै न सत असतं चाहै धनी उदार॥३॥
तजि अपने कुल धर्म्म ए म करैं अरु व्यौहार ।
सोई जाति प्रसिद्ध ह्वै बैठें हाट बजार ॥ ४ ॥

राजनगर की नागरी पुनि अनेक बहु भाँति ।
तिनमें मुख्य मनुष्य तिय बरनि कही दस जाति॥५॥
जौहरिनी छीपनि कह्यो पटवनि और सुनारि ।
गन्धिनि तेलनि तमोरनी किन्दुनि बननि कुम्हारि॥
दरजिनि आदि अनेक लघु जाति चूहरी अन्त ।
नगर द्वार गनिका बसैं सो चाहैं धनवन्त॥ ७ ॥

जौहरनि—कवित्त।

साँची सुधाबुँदनि सौ कुन्दन की बेलि किधौ साँचे भरि काढ़ौ रूप ओपनि भरति है। पोखी मुख रागनि बिमुख नखसिख करि चरन अधर विद्रुमन ज्यौं धरति है॥ हीरा संग मनि मोती मानिक दसन सेत स्यामता लसनि दृग हीरा को हरति है। जोबन जवाहिर सौं जगमग होत जात जौहरी की जोद्द जग जौहर करति है॥८॥

छीपनि वर्णन—सवैया।

सोने से सोहत गातनि सोहै सुहागिनि की अति सोहैं सुहाई। देव जू आवै लगी अँखियान मैं देखतही मुख की अरुनाई॥ ज्यौं ज्यौं रँगै

पटरङ्ग निचोरत त्यौं निचुरे अङ्ग अङ्ग निकाई। है छबि छापें करैं मन छाप सु छीपनि बाल छिपै न छिपाई ॥ ९ ॥

अथ पटवनि वर्णन—सवैया।

रेसम के गुन कीलि कला करि कीरति ऐंचि सनेह रचावै। देव दसौ अँगुरी उरझाइ कै डोरी गुहैं रस-रङ्ग मचावै॥ मोहति सी मन मोहत सी जन जोहति सी तनि भौंह नचावै। चञ्चल नैननि सैननि सौं पटवा की बहू नटवा से नचावै॥ १०॥

अथ सुनारी वर्णन—सवैया।

देव दिखावत कञ्चन सौ तन औरन कौ मन तावै अगौंनी। सुन्दर साँचे मैं है भरि काढ़ी सी आपने हाथ गढ़ी विधि सौंनी॥ सोभित चूनरी स्याम किसोरी के गोरो गुमान भरी गजगौनी। कुन्दन लीक कसौंटी में लेखी सी देखी सुनारि सु-नारि सलौंनी ॥ ११ ॥

अथ गन्धिनि वर्णन—कवित्त।

अरगजैं भीजि मरगजे बागैं बनी ठनी हाटि

पर बैठी आनिही सुघरपन सौं। कुन्द सौ बदन मृगमद बिन्दु बेंदी भाल झलकैं कपोल गोल दूने दरपन सौं॥ मैन मद छाके नैन देखि देव मुनि मोहैं सोहैं सटकारे बार कारे सरपन सौं। बन्धु कीये मधुप मदन्ध कीये पुरजन सु मोह्यो मन गन्धी को सुगन्ध झरपन सौं॥ १२॥

अथ तेलिनि वर्णन—कवित्त।

तिल हैं अमोल लोलनैनी के कपोल बीच कोटिक अनूप रूप वारि फेरियतु है। सोभा सुनैं जाकी कवि देव कहैं कौन कौन होत चित चौकनो चतुर चेरियतु है॥ घाट बाटहू में घट निपट बटोहिनि कौं नेकही निहारे नेहभरे हेरियतु है। सरस निदान तकि परस के कौन कहै पीबहूँ के परस परीमो पेरियतु है॥ १३॥

अथ तमोरिनि वर्णन—सवैया।

रङ्गित चोली तें ढोली खरी चुनि चार सी आछे उघेरि अमेठी। गोरी गुलाब लै लै छिरकै छबि भाव सो देव सुभाव सौं एंठो॥ सोने सी

अङ्ग सुरंगनि ओठनि कौन के जाति हिये मे न पैठी । ऊँची दुकान पै बेचति पान तमोरिनि ऐंचत सौंचत बैठी ॥ १४ ॥

अथ हलवाइनि वर्णन—सवैया ।

मीठो महा मृदु बोल कहै लघु बोल कहै मुसकाइ सुभाइनि । देव भुलाइ बटोहिनि बाट डुलवति चोरि लिये चित-चाइनि ॥ रूप अनूप भरी नख तें सिख सुच्छम सुधार सही को रसाइनि । हाट के ऊपर हाटक-बेलि सी बेचति है हलवा हलवाइनि ॥ १५ ॥

अथ मोदिनी बधू वर्णन—कवित्त ।

मदन के मोदभरी जोबन प्रमोदभरी मोदी की बहू की दुति देखे तिन टूनी सी । चाव रहै चित में चितौत दारिदै न राखी बोल मोल मीठी खाँड़ घीउ ते न ऊनी सी ॥ राज-बाट बीच वाट पारति बटोहिनि की बाट घाटि तोलैं मनु आँखिनि मै खूनी सी । चूनरी सुरङ्ग अँग ईंगुर के रंग देव बैठी परचूँनी की दुकान पर चूँनी सी ॥ १६ ॥

अथ कुभारिनि वर्णन—कवित्त।

चन्दमुखी मुरि मन्द हँसै मुख मोतिनि कौं गहि खोल्यौ डवा सौ। देव-सुधा भरे ऐंठ उठे कुच भेटि अघात सही मघवा सौ॥ रूप-उभार कुँभार की जाई के जोबन कौन तचायौ तवा सौ। काम के चक्र चढ़ायौ न को घट वाकौ न कीनौ अवास अँवा सौ॥ १७॥

अथ दरजिनि वर्णन—सवैया।

अन्तर पैठि दुहूं पट कै कवि देव निरन्तरता उर आनै। देत मिलाइ घनै अपने गुन-सार सुई किधौं दूती सुजानै॥ ताहि लिये कर मैं घर मैं रहै जाहि सिये भरमैं सोई छानै। होत करेजनि की दरजैं दरजी की बहू बरजी नहि मानै॥

अथ चूहरी वर्णन—कवित्त।

चीकने कपोल चीका चमकैं चुनी से दन्त तीखे चारु चञ्चल दृगञ्चल निवङ्गनी। कञ्चुकी मैं कसै कुच कञ्चन कली से झीने अँचरे के चोट झाँई रञ्चक उभङ्गनी॥ चटकीली चूनरी मैं चोट

DBA00010174HIN

सी चलावै भौंहै चेटक सी चालि पग जूती कार कङ्कनी। फूल से भरत छबि भार लागै भारू देत चूहरी चतुर चित-चोरनि चमङ्कनी॥ १६ ॥

अथ गनिका वर्णन—सवैया।

चाट उचाट सो चेटक सी भृकुटी चिकुटीनि जम्हाति अमैठी। जोबन के इतराहट सौं अठिलात अकोटनि ऐठनि ऐंठी॥ सौति भई सब नारिन की सगरे नर मोहि मनो मन पैठी। देव दृगञ्चल छोरनि सौं चित चोरति यौं चित चोरति बैठी॥ २० ॥

इति श्रीरसविलासकविदेवकृते नगरनागरीवर्णनम् नाम द्वितीयो विलासः॥ २॥

दोहा।

रानी राधा हरि सुमिरि बानी देव प्रकास।
रसबिलास नागरि नगर आयो द्वितिय विलास॥

अथ पुरवासिनि—दोहा।

पुर कहिये छोटो नगर राजनगन की तीर।
अपने अपने धर्म में चारि बरन की भीर॥ २॥

तहाँ विप्र छत्री बनिक कायथ कुल अरु सुद्र ।
नाऊ माली रजक ए पुरवासी निर छुद्र ॥ ३ ॥
पुरबासिनि तिनकी तिया कुल आचार विचार।
लिये धर्म सुभ-कर्मपन लाज काज व्यौहार ॥४॥

अथ ब्राह्मनी वर्णन—दोहा ।

सत्य सील सन्तोष निधि विप्रबधू सविवेक ।
न्हान गान जप तप नियम पूजन भजन अनेक ॥

सवैया ।

गङ्ग तरङ्गनि बीचि बरङ्गनि ठाढ़ी करै जप रूप उदोती । देव दिवाकर की किरनै निकसै विकसै मनु पङ्कज जोती ॥ नीर भरी अलकैं निचुरैं कुटिकैं छलकै मनो माँग के मोती । बिज्जुल सी लपटै भलकैं कन कज्जल सी अङ्ग उज्जल धोती ॥ ६ ॥

दोहा ।

छत्र धरन छत्रिय कह्यौ भूपति सौ है टाम ।
पूरब मैं रजपूत अरु पच्छिम छत्रिय नाम ॥ ७ ॥
रज राखन रज दान भट गाय विप्र हरि पीर ।
ताकी तिय छत्रिय बधू बरनौ गुननि अधीर॥८॥

अथ रजपूतानी वर्णन—सवैया ।

भाग भरी अनुराग भरी बड़ भागिनि सुघ सुहागिनि छाजै। अङ्ग अनङ्ग तरङ्गनि जानि इक गनिये सब संगनि साजै॥ सञ्चित कै रुचि बंचि वधूनि विरञ्चि रची सुनि लाजै। प्रेम भरी पुर भूप सुता गुन रूप रचो रजपूतनि राजै ॥ ९ ॥

अथ खतरानी वर्णन—सवैया ।

ज्यौं विनही गुन अंक लिखे धुनि यौं करि कै करता करि हार्यो। देव सु बानिक देखि अचानक आन कहू न को आन कुमार्यो॥ लाज लचैं त्रिय और रचै दिन काज विरञ्चि विचारि बिचार्यो। बारियै को रिस चोरति रानी इतौ खतरानी को रूप निहार्यो ॥ १० ॥

अथ वैस्यानी वर्णन—कवित्त ।

पीरे पीन कूचनि ये कञ्चुकी बदन कसी निकसी निकाई परै सूहे की सुहाती मैं। गोरें गरैं तरैं लरैं मोतिनि की तामैं झमकति धुकधुकी जैसे दूलह बराती मैं॥ देव चित चुभै वेष ए न

खुभे बाजूबन्द ललकत लाल लगिवे की रङ्गराती मैं। नवजोबनी की जोबनी की जोति जीति रही कैसो बने नीकी बनी नीकी छबि छाती मैं॥

अथ काद्‌यनी वर्णन—कवित्त।

रीझै रिझवारि इँदु-बदनी उदार मूर रूख की सो डार डाले रङ्ग रखियाँनि मैं। साँवरी सलौनी गुनवन्त गजगौनी महासुन्दर सुघर लाख लाख लखियँानि मै॥ जागी सब रैनि बड़भागी पिय प्यारे संग प्रेमरसपागी अनुरागी रखियाँनि मै। दाख्यौ मे दसन मन्द हँसनि विसद-भरी सद भरी सोभा मदभरी अँखियाँनि मैं॥१२॥

अथ सूद्रनी वर्णन—कवित्त।

नेह सौं निचारैं चित-चारैं डीठि जोरैं कोन डोरैं लागी ढोरैं डार सुरति अहार की। सोने के सरोज से उरोज उमगो है गोरें अङ्ग मैं सुहाई देव मुही जरतार की॥ कराठ सिरीकराठ कटि किङ्किनी कँगन कर जजरे पगनि गूजरी सु झमकार की। चन्द सौ वदन मन्द हँसनि गयन्द गति कोवरी कुरङ्गनैनी कुँवरि किरार की॥१३॥

अथ नाइनि वर्णन – कवित्त ।

घर घर डोलत सुघर नर माहिबे कों ऊघरी फिरत सब सुख सुखदैनियाँ । जावक के मिस काम-पावक जगावै देव हिय को हरत यों करत करसैनियाँ ॥ प्रेमी अनुरागिन कों हियरो रिझावै अरुझावै सुरझावै विरुझावै नैन पैनियाँ । बेनी गुहिबे कों जिकबैनी सौ तनैनी फिरें पैनी चितवनि की चपलननी ननियाँ ॥ १४ ॥

अथ मालिनि वर्णन—कवित्त ।

बीनत फिरत फूलटाग्यौ दल सै टुकूल खुलैं भुजमूल लटैं घूमं ज्यां अलनियाँ। चौसर चमेली चारु पहिरें सिंगारहार लची कुच भार जीति लीनी है फलनियाँ ॥ जुही गुही माँग आँख चम्पक पराग कुही देव लखें लोचन लजाती हैं नलनियाँ । बाग में बिलोको अनुराग की सी बौहनी सी माहनी सुघर जगमोहनी मलनियाँ ॥

अथ धोबिनि वर्णन—कवित्त ।

घाट पर ठाढ़ी बाट पारत बटोहिनि की

चेटक सो डीठि मन काका न हरति है। लटकि पटकि पट छियो करि मटकति देव भुज-मूलनि तै फूल से झरति है॥ जोवन को ऐंठ अठिलागि सो उठाहैं कुच ओठनि अमैठि पट ऐंठि कै धरति है। धोबिनि अनोखी यह धोवति कहाधौं करि सुधा-मुख राखत न ऊधम करति है॥१६॥

इति पुरवासिनी नायिका वर्णनम् सम्पूर्णम्।

अथ ग्रामिनी नायिका वर्णन—दोहा।

बन में जो लघु पुर बसै तासो कहिये गाँव।
तहाँ बसै ग्रामीन तिय तिन्हें गँवारी नाँव॥१७॥
अहिरनि अरु काछिनि कहौं नारि कलारि कहारि।
नूँनेरी अरु पाँच विधि बरनहु नारि गँवारि॥१८॥

अथ अहीरनी वर्णन—सवैया।

माखन सों मन दूध सों जोबन हैं दधि तें अधिकै उर ईठी। छैल रँगीलिका छाछि कै आगि समेत सुधा बसुधा सब सीठी॥ नैननि नेह चुवै कवि देव बुझावत चैन वियोग अमीठी।

ऐसी रसीली अहीरी अहै कहु क्यौं न लगै मन-
मोहन मीठो ॥ १९ ॥

अथ काछिनि वर्णन—कवित्त।

राखे समाधान समाधान के छिवैयनि कौं
ईंगुर से अङ्गनि आँगुरी है गँवारि मं। टव कही
जगमगी जोवन जुहाई ऐसी एते पै जुहाई
पैठी सरोवर वारि में॥ वारनि मुखावति उघारे
सीस गावति भुलावति सी लोगनि फिरत चहूँ
पारि में। आँचर अँगोछि ओछि ओछि कुच पोंछि
लिये कोंछ में कमल डोले काछिनि कछार मं॥

अथ कलारी वर्णन—सवैया।

आप पिवे अरु औरनि प्यावति लाज के
तूल ज्यौं तूमति डोलै। जोवन जेब जकी सी
कलारि छकी मद सौं झुकि झूमति डोलै॥
गावति रीझि रिझावति त्यों मतवारनि को मुख
चूमति डोलै। काम के बान हनी हिय मैं वर
बाहिर घाइल घूमति डोलै॥ २१॥

अथ कहारी वर्णन—कवित्त।

जगमगे जोवन जगी हैं रँगमगी जोति लाल

लहँगा पै पीली ओढ़नी बहार की। झाँझ की झँवरिया मै सफरी फरफरात बेचति फिरति बोलै बानी मनुहार की॥ चाहैंहू न चाहैं चहूँ-ओर तैं गहत बाहैं गावत उमाहैं रोकि रहै चित हार की। देखतही मुख बिष लहरि सी आवै लगी जहर सौं नैन करै कहर कहार की॥

अथ नूनेरी वर्णन—कवित्त।

पीरे पीरे आँचर खेत लुगरा लहर लेत लहँगा की लगी लाल रँगी रङ्ग हेरा को। गावत मैं डोरि-छाई अँगियां उचाहैं कुच बीच पचरंग पातिताई तीनि फेरा की॥ हाथनि लखौटा पाइ चूरा पचमनो गरैं गोरी की जुगल जानु है उन्हारि केरा की। गजगौनी नौनो धरैं नौन की ढरैया सीस नीरज से नैन नारि निरखी नुनेरा की॥ २३॥

अथ बनबासो बधू वर्णन—दोहा।

बन्या बनबासिनि बधू ताहू त्रिबिधि बखानि।
मुनि त्रिय अरु त्रिय व्याध की और भीलनी जानि॥

अथ मुनि त्रिय वर्णन—सवैया ।

फूली लतान को छत्र दिये मन पत्र सुखासन है सुखकारी । चौंर करे चमरी चय मोर चकोर मृगी मृग चाकर भारी ॥ गावति भौंर लजावति कोकिल आइ मिली सगरे बनचारी । जीति लिये मृगराज सबै अब राज करै रिषिराजकुमारी ॥ २५ ॥

अथ व्याध तिय वर्णन—सवैया ।

है करबीन लिये परबीन बजावति गावति मोहनी तानन । माहि लिये मृग औ खग मानुषि गान सुनें समुहैं करि कानन ॥ सोर पर्यो सगरे बनबीचन कोऊ रह्यो तपसी थिर थान न । बङ्क बिलोकनि बेधि हियो सु कियो बध व्याधबधू बिनि बानन ॥ २६ ॥

अथ भीलनी वर्णन—कवित्त ।

स्यामघन ऐसे तन सघन जवन ऊँच घने घुँघुँरारे बार जोबन जकी फिरै । मोरपच्छ भूषन बिराजैं गुंजमाल गरैं मद भरे नैन नेक टारै

न टकी फिरै॥ किलकि किलकि पुलकत काम व्याकुल ह्वै सीतल सलिल अवगाहत थकी फिरै॥

अथ सैन्या वर्णन—दोहा।

कटक बसै ते सैनया तीनि भाँति कहि ताहि।
इक ब्रषली बेस्या दुतिय त्रितिय सुकेरनि जाहि॥

अथ ब्रषली वर्णन—कवित्त।

लहलह्यौ जोबन हँसत डहडह्यौ मुख गहगह्यौ काजर चखनि चकायो है। कानन करन फूल मोहत जरी दुकूल नथ मैं अधिक लटकन लटकायौ है॥ लाल चल बेंदी टेढ़ी चितवनि सु मन्द चाल चौकन कपोल गाल को न भटकाया है। भौंहनि मरोरि मुरि मारि गोरे गात देखौ बातनहीं सगरो कटक अटकायौ है॥२८॥

अथ बेस्या वर्णन—कवित्त।

उज्जल उज्यारी सी झलमलात झीनी सारी झाँईं सी दिखाई देत देह की विसाल सी। जोबन की जोतिनि सों नख तें सिखा सौं मिलि कहै कवि देव ऐसी एक ह्वै मसाल सी॥ बोलनि

हँसनि मन्द चलन चितौनि चारुताई चतुराई चित चोरिवे की चाल सी। संग मैं सहेली सौं नवेली बाल रगमगे अङ्ग अङ्ग सोभा जगमगति मसाल सो ॥ ३० ॥

अथ मुकेरनि वर्नन—कवित्त ।

राची कर महँदी महावरि सौं राजै पग घाघरे की घूम मति घूमति घनेरिनि की। रँग भरे गोरे अङ्ग अँगिया लसति लीली लाल ओढ़नी मैं डीठि डोलैं चित चेरनि की॥ हाटक पटी-सी बाँही हाटि पै हँसति ठाढ़ी बाट विनि तोलैं बाट पारे बहुतेरिनि को। गाहक बुलावै सैन करै दैन करै सौदा नैननि मुकरि जाइ मुकरि मुकेरिनि की ॥ ३१ ॥

अथ पथिक बधू वर्णन—दोहा ।

सदा बसै ते पन्थ मैं पथिकबधू ते जानि ।
वनिजारनि जोगिनि नटी कँग हेरनि सुख खानि॥

अथ बनिजारिन वर्णन—सवैया ।

एड़िनि ऊपर घूमत घाघरो तैसिये सोहति

सालू की सारी । हाथ हरो हरी छाजै छरी अरु जूती चढ़ी पग फूँद फुँदारी ॥ ऊँचे उरोज हरा घुँघुचीनि के हाँकहि हाँकति बैल निहारी । गातनही दिखराइ बटोहिनि बातनिहीं बनिजै बनिजारी ॥ ३३ ॥

अथ जोगिनि वर्णन—कवित्त ।

डोलै बन बन जार जोबन के जाँचकनि राग बस कीने बनवासी रीझि रहे हैं । मोहे महा पन्नग अनेक अनगन खग कान दै दै कोल भील केते रीझि रहे हैं ॥ ठाढ़े ढिग बाघ बन चीते चितवत दृग झाँख मृग साखा मृग रीझ रीझि रहे हैं ॥ ३४ ॥

अथ नटी वर्णन सवैया ।

पातरे अंग उड़ै बिनु पाँखनु कोमल भाषनि प्रेम भिगी को । जोबन रूप अनूप निहारि कै लाज मरै निधिराज मिरी की ॥ कोल से नैन कलानिधि सो मुख को गिनै कोटि कला ग-हिरी को । बाँस के सीस अकास में नाचत को न छकै छबि सोनचिरी को ॥ ३५ ॥

अथ कँधेरनि वर्णन—सवैया ।

साँवरे अङ्ग सरोज से नैन उरोज उठे अठि-
लाति कपोलैं । ऐंठति सी भुजमूल उठाये अँ-
गूठनि चालि चवाइ सी बोलैं ॥ हाँसी मैं डारति
फाँसी बिसासनि पोहिति सी चिति टोहति
डोलैं । मोरपखा घुंघुंचीनि के जेवर जेब सौं
जेवरी बेचति डोलैं ॥ ३६ ॥

इति पथिक बधू वर्णन—दोहा ।

जाति करम गुन अगनपन नारि अनेक प्रकार ।
तातें मैं सूछम कह्यौ कछू बुद्धि अनुसार ॥ ३७ ॥

इति श्रीरसविलासे कविदेवदत्तकृते पुरवनसैन्यामारग-
बधूवर्णनम् नाम तृतियोविलास: ॥ ३ ॥

दोहा ।

काम अन्धकारी जगत लखै न रूप कुरूप ।
हाथ लिये डोलत फिरै कामिनि छरी अनूप ॥ १ ॥
तातें कामिनि एक ही कहन सुनन को भेद ।
राचैं पागै प्रेमरस मेटै मन के खेद ॥ २ ॥

रची राम संग भीलनी जदुपति संग अहीरि ।
प्रबल सदा बनबासिनी नवल नागरिन पीर॥३॥
कौन गनै पूरब नगर कामिनि एकै रीति ।
देखत हरै विवेक कौं चित्त हरै करि प्रीति ॥४॥

सवैया।

ठाढ़ी ही बाग में भागभरी मनों काम भुजङ्गम के बिष चोई। आनि परी चित बीच अचानक जोबन रूप महारस मोई ॥ नागरि धों पुरबासिनि ही कै गँवारि किधौं बनबासिनि कोई। को गनै भोजन की जन की पन की तन की मन की मति खोई ॥ ५ ॥

अथ अष्टाङ्गवती नायिका के अष्टाङ्ग—दोहा।

जा कामिनि में देखिये पूरन आठहु अङ्ग ।
ताही बरनें नायिका त्रिभुवन मोहन रङ्ग ॥६॥
पहिले जोबन रूप गुन सील प्रेम पहिचानि ।
कुल वैभव भूषन बहुरि आठौं अङ्ग बखानि ॥७॥

अथ जोबन वर्णन—दोहा।

बालापन कौं भेदि कै छबि कौं अङ्कुर होइ ।
जग मोहै दिन दिन बढ़ै जोबन कहिये सोइ॥८॥

सवैया ।

खेलतही में भयो कछु खेल खिलावन वारी भई सब सौते। देव जू चौंकि चितै चकिवे सु-चबाव करैं उठि आपनी गौतै॥ औरडू साँझ तैं सूर उदै लगि औरई साँझ लौं सूर उदौ तै। रूप की ओप अनूप धरी पल बालि सी बाढ़त कालि परौं तै॥ ६॥

कवित्त ।

लहलही बैस उलही है दुलही की देव उर मैं उरोज जैसे उभरत भाग है। अनगिने दिननि अनूप दुति आनन की देखतही उपजत अनूठो अनुराग है॥ तैसीयै तरल तीखे अनसीखे नैननि तैं निचुरें निपुन सुधा भावते को भाग है। सोने से सुरंगनि तं चम्पा चारु अंगनि तैं रंगनि सौं ऊँघत तरंगनि सुहाग है॥ १०॥

इति जोबन लक्षण वर्णनम् सम्पूर्णम् ।

अथ ज्ञातयौवना वर्णन—सवैया ।

पीछे तिरीछे कटाछिन सौं इत वै चितवैं री लला ललचोहैं । चौगुनी चैन चवाइनि के चित चाइ चढ़े हैं चवाइ-मचोहैं ॥ जोबन आयौ न पाप लग्यौ कवि देव रहैं गुरुलोग रिसोहैं । जो मैं लजैये औ जैये जितैं तितैं पैये कलङ्क चितैये जौ सौंहैं ॥ ११ ॥

अथ रूप वर्णन—दोहा ।

देखतही जो मन हरै सुख अँखियन कौ देइ ।
रूप बखानैं ताहि जौ जग चेरौ करि लेई ॥१२॥

उदाहरण—कवित्त ।

कुन्दन सौ अंग नवजोबन सुरंग उठे उरज उतंग धन्य प्यौ जु परसतु है । सोहति किनारी वारी तन सुख सारी देव सीस सीसफूल अधखुल्यौ दरसतु है ॥ बेंदिया जराव बड़े मोतिनि सौं नीकी नथ हलत तरौंननि तें रूप सरसतु है । गोरी गजगौनी लौनी नवल दुलहिया तेरे भागभरे मुख पै सुहाग बरसत है ॥ १३ ॥

यथा ।

घूँघट खुलत अब उलट ह्वै जैहै देव उद्दत मनोज जग जुद्ध जूटि परैगो । को कहिँ अलीक बात सोकहैं मु रीक सिय लोक तिहुंलोक की लुनाई लूटि परैगो ॥ दैवनि दुराव मुखनान्तर तरैयनि को मण्डल मटिक औ चटकि टूटि परैगो । तो चितै सकोचिसोचि मोचि मद मूरछि ह्वै छोरतैं छपाकर छता तें छूटि परैगो ॥ १४ ॥

अथ गुन वर्णन—दोहा ।

काइक बाचिक करम करि बाँधै सब को चित्त।
राव रङ्क रीझैं गुनहि होइ जगत को मित्त॥१५॥

सवैया ।

गाइ बजाइ नचाइ के नारि रिझाइ के नाथ बताइबो सोह्यो । चित्र विचित्र कला कविता रस देव जू चातुरी सौं चित पोह्यो ॥ भोजन भूषन भाषनि भेष विसेष रचै रचना रुचि रोह्यो । रूप-उजागर राधे अहै गुनआगरि तैं जगमोहन मोह्यो ॥ १६ ॥

कवित्त।

वेदनिहूं गनै गुन जाके अनगनै भेद भेद बिन जाको गुन निरगुन रूप है। कितक विरंच्यो ऐसो रचै रुचिरच्यो महा सुखनि को सच्यो जहाँ बंच्यो ब्रजभूप है॥ तोही सुनि सुनि अवराधा अब राधा जस जानत न देव कोई कहा धौं अनूप है। तेज है कि तप है कि सील है कि सम्पति है राग है कि रंग है कि रस है कि रूप है॥ १७॥

अथ सील वर्णन—दोहा।

कोमल बचन प्रसन्नमन सज्जनरञ्जन भाइ।
दीन दया थिरता छिमा ये कहु सील सुभाइ॥१८॥

सवैया।

भौन भरे सगरे ब्रज सौंह सराहत तेरेई सील सुभाइन। छाती सिरात सुनैं सबकी चहुँ ओर तें चोप चढ़ी चित चाइन॥ एरी बलाइ ल्यौं मेरी भटू सुनि तेरी हौं चेरी परौं इनि पाइन। सौतिहू की अँखियाँ सुख पावति तो मुख देखि सखी सुखदाइन॥ १६॥

नेहभरी तैं सदेह खरी रस-मेह भरी अँखि-यांनि विसेषी। भौंहनि मैं झलकै मुसुकांनि सी काम कमान मनौ अवरेखी॥ देव सुभाव रखै मधु बोल सुधानिधि मैं न दूती रुचि पेखी। कै-सैंहूं क्यौंहूं रिसात जु पै सरसात घनौ अरसात न देखी॥ २०॥

अथ प्रेम वर्णन—दोहा।

सुख दुखहू मे एक सी तन मन बचननि प्रीति।
सहज नेह नित नित नयो जहाँ सु प्रेम प्रतीति २१

कवित्त।

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठैं सांसैं भरि आँसू भरि कहति दई दई। चौंकि चौंकि चकि चकि औंचकि उचकि देव छकि छकि बकि बकि उठति वई वई॥ दुहुंन के गुन रूप दोऊ बरनत फिरैं पल न थिरात रीति नेह की नई नई। मोहि मोहि मोहन कौं मन भयौ राधामय राधा मन-मोहि मोहि मोहनमई भई॥ २२॥

कवित्त ।

औचक अगाध सिन्धु स्याही को उमगि आयो तामैं तीनौं लोक बूड़ि गये एक सङ्ग मैं । कोरे कोरे कागद लिखे ज्यौं कारे आखर ज्यौं न्यारे कर बांचैं कौ न राचैं चित भङ्ग मैं ॥ नैंननि मैं तिमिर अमावस की रैनि अरु जम्बू रस बिन्दु जमुनाजल तरङ्ग मैं । यौंही मन मेरौ मेरे काम कौ न रह्यौ माई स्याम रङ्ग ह्वै करि समानौ स्याम-रङ्ग मैं ॥ २३ ॥

दोहा ।

सो संजोग बियोग करि है विधि बरनत प्रेम ।
सुखदायक सञ्जोगमै दुख वियोग कौ नेम ॥२४॥

अथ वियोग प्रेम—दोहा ।

तेरौ कह्यौ करि करि जीउ रह्यौ जरि जरि हारी पाइँ परि परि तौ न कीनी सम्हार । लालन बिलोकि देव पल न लगाए तब यौं कल न दीनीं तैं छलन उछलन हार ॥ ऐसे निरमोही सौं सनेह बाँधि हौं बँधाई आप विधि बूड्यो व्याध

बाधा सिन्धु निराधार । एरे मन मेरे तैं घनेरे दुख दीने अब एक बार दैकैं तोहि मूँदि मारौं एक बार ॥ २५ ॥

अथ कुलाचार वर्णन—दोहा ।

गुरुजन-पूजन धर्मपन लीने लोकविचार ।
लाज काज गौरव जहां सोई कुल-आचार ॥२६॥

सवैया ।

आपनें ऊकि रहैं अवलोकि विलोकिका एक सदा निरजोसी । लाज के काज सुकाज करैं सुनि साधु-समाज असीस दयोसी ॥ कीने प्रसन्न सबै करि सेवन काहू कहूँ गुर-देव न दोसी । दो कुल निर्मल मो कुल-कीरति गोकुल मो कुल-नारि न तोसी ॥ २७ ॥

कवित्त ।

तेरे अनगिने गुन-रतन जतन करि गुरुजन पावैं परि प्रेम पखियन में । पार न लहत गहराई न गहत देव केवल सुधाई मधु जैसी मखियन मैं ॥ एरी कुलवधू मेरी राधे ठकुराइनि

ह्वौं पाइनि परत तेरी चेरी सखियनि मैं। सील को सलिलनिधि विधि तू बनाई जाकी राजति जहाज-भरी लाज अँखियन मैं ॥ २८ ॥

अथ वैभव वर्णन—दोहा।

जहँा सहज सम्पति सु पुनि प्रभुता को अभिमान।
थिरता गति गम्भीरता वैभव ताहि बखान ॥२६॥

कवित्त।

फटिक-सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा-मन्दिर उदधि दधि को सो उफनाय उमगै अमन्द। बाहर तें भीतर लौं भीति न दिखाई देत छीर के से फेन फैलौ चाँदनी फरसबन्द॥ तारा सी तरुनि तामैं देव जगमग होत मोतिन की जोति मिल्यौ मल्लिका को मकरन्द। आरसी से अम्बर मैं आभा सी उजारी ठाढ़ी प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चन्द॥ ३०॥

रूपे के महल धूपे अगर उदार द्वार झँझरी झरोखा मूँदे चारु चिकराती मैं। उद्ध अध मूल तूल-पटनि लपेटे चहूँ लपट सुगन्ध सेज सुखद

सुहाती मैं ॥ सिसिर के सीत प्रिया प्रीतम स-
नेह दिन छिन से बिहात देव राती नियराती मैं।
केसरि कुरङ्ग-सार रङ्ग सी लिपत दोऊ दुहू मैं
दिपत औ छिपत जात छाती मैं ॥ ३१ ॥

इति वैभव सम्पूर्णम् ।

अथ भूषन वर्णन—दोहा ।

चमतकार रचनानि करि बहु बिधि माड़ै गात ।
भूषन वेस बिसेष कहुँ अलङ्कार अवदात ॥३२॥

कवित्त ।

कञ्चन-किनारीवारी सारी तास की मैं आस
पास तनीं मोतिन की झालरि झुकहरी ।
सीसफूल वैंना वेंदी वेसरि औ बीरनि मैं हीरनि
की भीर मैं अधिक छबि छहरी ॥ चन्द से बदन
भाँन भई वृषभाँनजाई यौवन-लुनाई की
लुवनि कैसी लहरी । काम घाम घी ज्यौं पिघ-
लत घनस्याम मन क्यों सहै समीप देव दीपति
दुपहरी ॥ ३३ ॥

गोरे मुँह गोल हरैं हँसति कपोल बड़े लोचन बिलोल लाल लोने लोनी लाज पर। लोभा लागे लाल लखिबे को कविदेव छबि गोभा से उठत रूप सोभा के समाज पर॥ बादले की सारी वरदामन किनारी जगमगैं जर-तारी भीनीं झालरि के साज पर। मोती गुहे कोरन चमंके चहूँओरन सु तोरन तरैयनि की तानो द्विजराज पर ॥३४॥

अथ अष्टाङ्गवती नायिका वर्णन—सवैया।

सुन्दर जोबन रूप अनूप महागुन ग्यान की रासि मची तूं। सीलभरी कुल दोऊ उजागर नागरि पूरन प्रेम-पची तूं॥ भाग को भौन सुहाग सौ भूषित भूमि को भूषन सांची सची तूं। आठहूं अङ्ग तरङ्गत रङ्ग सबै सुचि मञ्चि विरञ्चि रची तूं॥ ३५॥

थोरोयै बैस बिसाल लसैं कच टेढ़ी चितौंनि में सूधी चलै पथ। कोंवरे अङ्ग करेरे कुचा-व्रत लाज-लची गुन ऊँचे मनोरथ॥ लङ्क लग्यो उमग्यो उर देव सु बोलैं हरैं गरुई सी गिरा लथ।

नैंन बड़े बड़े नैसक अञ्जन मोती बड़े बड़े नै-
सक सौ नथ ॥ ३६ ॥

दोहा ।

एहि बिधि आठौ अङ्ग करि पूरन नारि जु होइ ।
तिहिं बरनैं नायिकाहौं जिहिं बरनौं कबिलोइ॥३७॥
केसव आदिक महाकबि वरनौ सो बहु ग्रन्थ ।
हौ हूं बरनत ताहिं अब सरस अपूरब पन्थ॥३८॥
एक बार जद्यपि कही मति प्राचीन प्रकास ।
भाव सहित सिङ्गार रस रचिकै भावबिलास॥३९॥
रसबिलास रचि ग्रन्थ सौ कहत दूसरी बार ।
वही नायिका भेद सब सुनहु नवीन प्रकार॥४०॥

इति श्रीरसबिलासे कविदेवदत्तकृते अष्टाङ्गनायिकावर्णनम्
नाम चतुर्थो विलासः ॥ ४ ॥

दोहा ।

रानी राधा हरि सुमिरि बानी देव प्रकास ।
रसबिलास अँग नायिका भयो चतुर्थ बिलास॥१॥

अथ नायिका भेद वर्णन—दोहा ।

आठ भेद नायिका के बरनत हैं कवि सन्त ।
भेद भेद प्रति होत हैं अन्तर भेद अनन्त ॥ २ ॥
जात कर्म गुन देस अरु काल वहो क्रम जानु ।
प्रकृत सत्व नायिका के आठो बेद बखानु ॥ ३ ॥

अथ जाति भेद वर्णन—दोहा ।

पद्मिनि चित्रिनि संखिनी हस्तिनि कहौं बिचारि ।
जाति भेद यहि भाँति सों कही नायिका चारि॥४॥

अथ पद्मिनी लच्छन वर्णन—दोहा ।

हंसभाष हँसै गमन लघु भोजन मृदु हास ।
सती सत्य रुचि सील सुचि पद्मिनि पद्म-सुबास ५

कवित्त ।

सारद के बारिद मै इन्दु सी लसत देव सुन्दर बदन चन्द्रिका सी चारु चीर है। सौंधो सुधाविन्दु मकरन्द सी मुकतमाल लिपत मनोज तन मञ्जु गी सरीर है॥ सीलभरी सलज सलोनी मन्द मुसकानि राजै राजहंस-गति गुननि गम्भीर हैं। घेरी चहुँ ओरन ते मोरन की भीर भारी मोरन की भीर मै चकोरन की भीर है॥ ३ ॥

अथ चित्रनी लच्छन—दोहा।

मोर भेष भूषन बसन गज गतिअति सुकुमारि।
चञ्चलनयनी चितहरनि चतुर चित्रनी नारि॥७॥

कवित्त।

देखो न परत देव देखिबे को परी बानि देखि देखि दूती दिख-साध उपजत है। सरद उदित इन्द बिन्द सी लसत लखे मुदित मुखार-बिन्द इन्दिरा लजत है॥ अद्भुत ऊष सी पियूष सी मधुर बानी सुनि सुनि श्रवननि भूख सो भजत है। मन्त्री कह्यो मैन पर तन्त्री कह्यौ बैन पर बिना तार तन्त्री जीभ जन्त्री सी बजत है॥८॥

अथ संखिनी लच्छन—दोहा।

दीरघ सिर कर चरन कटि लघु नितम्ब कुच नैन।
स्वल्प छिमा सन्तोष मुद सङ्खिनि तिक्त न बैन ९

कवित्त।

कोपभरी लघु गुप्त परी उर बात चलै तरु डार सी डोलै। काम छरी सी लगै उछरी सी फिरै मछरी सी सुभाव बिलोलै॥ भौंह-चढ़ी कु-

टिलै अखियँा अति तीखी कटाछिनि चित्त न खोलै। प्यारे सों रूसि रहै बिन दोष बिना रिस रोस-रिसानी सी डोलै ॥ १० ॥

अथ हस्तिनी लच्छन—दोहा।

थूल मुकर पद अधर कटि भारी कुच भुज जान।
द्विगुनी बहु भोजन गमन हस्तिनि तिय पहचान॥

कवित्त।

गुलगुली गोल मखतूल को सों गेंदुवा गड़े न गुड़ी जी में जऊ करत ढिठाई सी। चोर की सी गठरी छुटै न छतियां तें मुख लागत अँध्यारे हूं मे लागत मिठाई सी॥ भूखे को सो भोजन न भूलत सवाद मखौं नेकहूं उमेठे नये मेह की इठाई सी। सुरत सँयाग कौ नहीं न करै निस दिन भोग को गुपत गुपचुप को मिठाई सी॥१२॥

इति जातिभेद सम्पूर्णम्।

अथ कर्मभेद नायिका लच्छन—दोहा।

कर्म भेद करि नायिका तीन प्रकार बखानि।
सुकिया परकीया कहूं सामान्या चरु जानि॥१३॥

अथ सुकिया भेद वर्णन—दोहा ।

कायिक वाचिक मानसिक पति-रति तीनो कर्म ।
तासौं कवि सुकिया कहैं लिये सकल कुल कर्म१४

कवित्त ।

सीलभरी बोलति सुसील बानी सबही सौं देव गुरुजननि की लाज सों लची रही । कोमल कपोल पर दीसै हरदी सो दुति चूंनी सी सकुच मुसुकानि मैं मची रही ॥ लालन की लाली अखियाँनि मैं दिखाई देत अन्तर निरन्तर ही प्रेम सौं पची रही । कुँवरि किसोरी मुख मोरी करे सखियन सौं चोरा चोरी चित गति रोरी सी रची रही ॥ १५ ॥

अथ परकीया भेद वर्णन—दोहा ।

काइक वाचन पतिहि रत मनसा उपजत जुक्ति ।
गुप्त प्रेम परपुरुष कौं सो परकीया उक्ति ॥१५॥

कवित्त ।

मारी विपतिन की पति उछङ्ग पौढ़ी गूढ़ कोर में अँकोरी देव काम गनि पकती । मानैहूं सुरति

पै सुरत कहूँ लागी देव भौंहनि मरोरि मुरि उर ते खिसकती ॥ नीति की चितौंनि चित बीच चुभि खुभी रहैं ऊँचौ रहै आँखिनु करेजनि कसकती । सुपनैं के मिसु करि रोइ उठै रिस करि मोही मनहीं मन ससूसनि सिसकती ॥ १७ ॥

अथ सामान्या भेद वर्णन—दोहा ।

वाचकही सब सौं रचै करै जगत मनुहारि ।
तन मन धन चाहै सदा सो सामान्या नारि॥ १८॥

सवैया ।

हेरतही हरि लेत हियो बस बिस्व कियो रस की बतियाँ मैं। जोवन रूप की ओप अनूप सुन्यौं गुन येतौ न काहू तिया मैं ॥ कन्त कियौ धनवन्त निहारि कैं चकत ना अपनी घतियाँ मैं । हाय दई हँसि हौंस भरै मुँदरी कर देखि धरी छतियाँ मैं ॥ १९ ॥

अथ गुन भेद वर्णन—दोहा ।

कहीं सत्त रज तम त्रिगुन उत्तम मद्धिम अन्त ।
तीनि भाँति गुन भेद करि कहत नायिका सन्त२०

सत्व प्रकृति उत्तम कह्यौ मध्यम रजस सुभाइ ।
अन्त तमोगुन प्रकृति तिय बरनत कवि समुदाइ २१

अथ तीनौं की चेष्टा वर्णन दोहा ।

अनहित सौं हित उत्तमा सम सौं सम मधि जानि।
अधमा हितहू सौं न हित तीनौं तिय पहचानि।

कवित्त ।

धीखिहू कहौं जौं कटु बोल तौ कटाऊँ जीभ
क्षार डारौं आँखिनि की आँसू झलकनि पैं । कौन
कहै कैसा सौति सौं तौ ठकुराइनि लिखी हैं ब्रज-
बालनि के भाल फलकनि पैं ॥ ह्वै रहो न जीकी
हौं नजीकी दुचिताई रहौं पी की प्रानप्यारी
लहौं नीकी ललकनि पैं । दूजो नहीं देव पूजौं
राधिका के पग पर पल कत लाऊँ धरि ध्यान
पलकनि पैं ॥ २३ ॥

अथ देसादि वधू वर्णन -दोहा ।

दिस दिस देस विदेस की नारी और अनन्त ।
नीरस नारि निहारि तेहिँ बरनत नाहि सुमन्त॥

अथ मध्य देस वधू वर्णन सवैया ।

कोविद कामकला सकलानि कलानिधि सी

गुन रूप निधानै। गीत सँगीत विनीत सदा सुभ-कर्म पुनीत सबै सुख सानै॥ देव अचारि विचारि रची सुचि साँची सची रुचि कैं पहचानै। अन्तर-वेद विचच्छन नारि निरन्तर अन्तर को गति जानै॥ २५॥

अथ मगध वधू वर्णन—कवित्त।

प्रेममदमगन उछाह-उमगनिभरी मग न धरति पग घूमति ज्यों घनियै। खोले उर बाहैं रति पैरति अथाहैं उपभोग सिन्धु माहैं परिरंभ सुख सनिय॥ सुन्दर सरस रस बस कीनों प्यारो पिय न्यारो हिय तें न होत देव विधि बनियै। रहँसि सिरावै कामपावक-दगध-पीर मगध की मानिनि अगाध गुन गनियै॥ २६॥

अथ कोशलवधू वर्णन कवित्त।

सोन रुचि रुचि मंच रुचिर बिरंचि रची रंचक सी सचीरूप-बंचित सी दामिनी। विमल विचित्र विधि चित्र की सी लिखी चारु रचना चरित्र सो विचित्र गति गामिनी॥ भोग उपभोग

अंग संग सुख जोग जामैं प्रेम सौं प्रसन्न लाज सनत बिरामिनी । देव पति-देवता दिपति दुति देवता सी देखी जग में कुशल एक कौसल कुल कामिनी ॥ २७ ॥

अथ पाटलवधू वर्णन कवित्त ।

चंचल दृगंचल चपल चितवति चोरि चित-वति चारु चढ़ी चारुता प्रगटही हाँसभरी हँ-सति लसति हुलसति हियं बिलसति बाल मनौं नेह को निकटही ॥ देव हरषत बरषत मानो मन-रस भरस बचन रसना सो रुचि रटही । मोह की अँध्यारी मैं उजारी ह्वै रमति रति प्यारी पटना की पट लंपट निपटही ॥ २८ ॥

अथ उत्कलवधू वर्णन कवित्त ।

बिरज बिराजै रज रजत कियो है पीति गुंज अलि पुंजन लै कीनी कुंजगली सी । मूँदे मुख बाहिर बिनत बिन बात डालें अन्तर निरन्तर उनौंदी भाँति भली सी ॥ रहत अवासही सुबास सो बसायो बन देव अनुकूली मन फूली तन

फली सी। खिलति सहेलिन नवल बाल चेलिन में देखी उतकलवधू अम्बुज की कली सो ॥२९॥

अथ कलिंगबधू वर्णन क०।

मदन के मद मतवारी नव भूमि झाकें सदन थिरात न मिरति रति रंगना। पीतम के रूप को मया सी अचवत तन प्यासीये रहति जो लहत सुख संग ना॥ प्रेम रस बस प्यावै प्यार सो अधर रस लागत नखच्छत रुचिर भूष अंगना। अंग अंग उमगि अनंग उपजावति अलिंगन अघात न कलिंग की कुलंगना॥ ३०॥

अथ कामरू बर्णन क०।

तीनिहुं लोक नचावति फूक में मन्त्र के मत अमृत गती है। आप महागुनवन्ति गुसाइनि पाइनि पूजति पानपती है॥ पैनी चितौनि चलावति चेटक को न कियो बस जाग जती है। कामरूकामिनि काम कला जगमोहिनि भामिनि भानमती है॥ ३१॥

अथ बंगबधू बर्णन क०।

कंचनमण्डित रूपभरी पहिरे पट लाल प्र-

कास बिलासिनि । सुन्दर स्याम लची अभिराम धरै सिर दाम गरें मृदु मालिनि ॥ मंगर मै न छुटै कटि सों लपटौ पिय प्रानन आनन पालिनि। देव रहै हियरें लगि कैं करवाल किधौं बर बाल बँगालिनि ॥ ३२ ॥

अथ विंधवनबधू वर्णन क० ।

ढूंढ़ति फिरति रतिकन्त के इकन्त गृह पति की सुरति मति मति भूली मन की । डोलति अकेली अकुलानी चिय केली रस बेली सो न-बेली तलबेली अति तन की ॥ डौंड़ी कौं बजाइ छौंड़ो लाज उपजाइ नेह गौंड़ो नारि टौंड़ि के उरैनि प्रेमपन की । झिलिमिली झांई सी दि-खाई पति झार मैं महौषधि की बूटी सी बधूटी बिन्धबन की ॥ ३३ ॥

अथ मालवबधू वर्णन सवैया ।

बेलनि चालि बिलोकनि सौं दिनही दिन दूगुन नेह बढ़ावै । अंगही अंग अनंग तरंगनि आदर सों उठि ओठनि प्यावै ॥ मालवदेस की

बाल मनोहर बालम के चित की गति पावै।
जोग सबै उपभोग भले करि भाँतिनि भोग सु-
भोग करावै ॥ ३४ ॥

अथ आभीरवधू वर्णन क० ।

विधि की सी असिष असेष भेष भूषन बि-
सेष सिख नख रची रेख सी सुहावती। कर पद
पद्म पद्मनैनी पद्मिनी की पद्म सी सोभा सबै
देखन मे आवती ॥ रमा रूप अधम सुरंभा की प्र-
रंभन दै अतुल मनोज ओज आगिन सिरावती।
अंगनि अभूति अति आभा अभिरामन कौं अ-
भिराम आभरन आभीरिनि भावती ॥ ३५ ॥

अथ विराटबधू बर्णन क० ।

अरुन बसन सदा सोहत तरुनि तन कोमल
करन चारु मार सर मार की। पिय के जियनि
जीम प्यारी हिय बसै प्रेम रस बस छाकी वाकी
थाकी रति भार की ॥ तीषे नषिया तन अघात
न अधरपान मानति सुरति रुचि सुरतरु डार
की। वारनगमनि वड़े वारन की वर तनु चम्पक-
बरनि बरु बनिता बिरार की ॥ ३६ ॥

अथ कुंकलबधू वर्णन क० ।

गोरी गजराजगति गुननि गहीर-मति भारे भागही रमति सुरति सकोचनी । आलिङ्गन चुम्बन अधर पान नखदान मान सों बचन रचना सों रुचि-रोचनी ॥ जानै रीति जी की पहिचानैं प्रीति नीकी सुखदानी सबही की प्यारी पी की दुखमोचनी । केसरि करै न सरि को कनक जाकी दरि कोकनदरी की नारि कोकनद लोचनी ॥

अथ करेलबधू वर्णन क० ।

चम्पा के बरन तन चन्दन बसायो बन चन्दन मे बसन बसे चन्दन के वारि हैं । खग मृग मीन जल थल के अधीन होत गुंजरत भौंर पुंज कुंजनि बिसारि हैं ॥ कौन करै सब कहि देव ताहि देखतही मोहि मन देवता करति मनुहारि हैं * * * * * * ॥ ३८ ॥

अथ द्राविड़बधू वर्णन क० ।

देवता दरसियतु देवता सरस देव इह विधि और नहो देवनरी नागरी । सहज सुभाइ सुचि

संचि रुचि सीलमति कोमल विमल मन सोभा सुखसागरी ॥ सुन्दर सुबास बास कोमल कला निधान जानत तहां न ताहि चाहि चित आ-गरी । देखी देस द्रावड़ की सुन्दरी निविड़ नेह गुननि अनूप रूप ओपन उजागरी ॥ ३६ ॥

अथ तिलंग वधू वर्णन क० ।

साँवरो सुघर नारि महासुकुमारि सोहै मोहै मन मोहन को मदन तरंगनी । अनगने गुननि के गरब गहोरमति निपुन सँगीत गीत सरस प्रसंगनी ॥ परम प्रवीन बीन मधुर बजावै गावै नेह उपजावै यों रिझावै पति संगनी । चातुर सुभाय बङ्कभौंहनि दिखाइ देव विंगनि अलिंगन बनावति तिलंगनी ॥ ४० ॥

अथ करनाटकवधू व० कवित्त ।

सौंधैभरी सूधी सी सुधानिधि सुधारी विधि सहज सुबासनि की रासि लहियति है । जगमगै बसन सुरंग रंगमगै अंग मदन तरंगनि के रंग चहियति है ॥ बोलनि बिलोकनि चलनि चतु-

राई चारुताई सुघराई नीको रीभि रहियति है। प्रेम परिपाटी रूप जोबन की पाटी पढ़ि देव दुति साटी करनाटी कहियति है ॥ ४१ ॥

अथ सिन्धुवधू वर्णन क० ।

बसुधा कौं सोधि कैं सुधारी बसुधारनि सौं सरब सुधारनि सुधारन सुबेस की । धरम की धरनी धरा सी धाम धरनी की धर धरनी की धन्य धन्यता धनेस की ॥ सिद्धन की सिद्धि सी असिद्धि सी असिद्धन की साधता की साधक सुधाई सुधाबेस की। सुधानिधिदानी सुधानिधि की सुसुद्ध विधि सिन्धुरगवनि गुनि सिन्धु सिन्धुदेस की ॥ ४२ ॥

अथ गुजरातवधू व० क० ।

छित की सी छौनी रूपरासि सी इकौनी बिधि चाय सो रचौनी गोरी कुन्दन मे गात की। देव दुति दूनी दिन दिन और हूनी ऐसी अनहोनी कहूँ कोई गोरी दीप सात की ॥ रति लागै बौनी जाकी रंभा रुचि बौनी लोचननि लल-

चौनी मुख जोति अवदात की। इन्दिरा अगौनी इन्द इन्दीवर औनी महासुन्दर सलौनी गज-गौनी गुजरात की ॥ ४३ ॥

अथ मारवाड़वधू वर्णन कवित्त।

चित्र की सी लिखी चारु चित्रिनी बिचित्र-गति रची है बिरंचि निज रचना विचार की। रम्भकी बची न रुचि रचिनि बिरंचि वाच्यौ संचित सुचित्त सुचि सोभा सुख सार की ॥ रूप की सी मुद्रिका समुद्र गुन सील की सी आदर उदारताई देवतरु-डार की। काम की निसैनी कमला सी सुखदैनी पियप्यारी पिकवैनी मृग-नैनी मारवार की ॥ ४४ ॥

अथ कुरुदेसवधू वर्णन कवित्त।

नखसिख नेहभरी मदन-तरंगनि सौं अंग अंग देव रंग रंग रीझि रहिये। साचैं भरि काढ़ी मानो नाचैं दृग खंजन सु देखें विरहागिनि की आचैं नहिं सहिये ॥ सोहैं महासुन्दरि विमोहै मन मुनिन के को है ऐसो दूसरी सलोनी नारि

लहिये । गोरी सी किसोरी चितवनि बीच चोरी करै भोरी कुरुदेस की कुरंगनैनी कहिये ॥४५॥

अथ कुरमोवधू वर्णन सवैया ।

नासिका कीर लकीर सी भौंहनि तीर सी ताकनि है पिकबैनी । भौंर अभीरनि भीतर भीर सुभाइ भरी सु उभै रसदैनी ॥ धीरज देव अधीरज होत चितौनि चितौति अधीरज पैनी। पीर हरै करवीर की कामिनि छीरज से मुख नीरजनैनी ॥ ४६ ॥

अथ पर्वतवधू वर्णन कवित्त ।

पंकज से नैन बैन मधुर पियूष जैसे अधरनि धराधर सुधा सरबत की । देव कोई वाके जोग भोग वै अखण्ड सुख भौंहनि प्रकासी जोति कासी करवत की ॥ सील कै सुभाइनि कहूँ न काहू कबहूं कि जबहूं की तबहूं करत गरबत की। इन्दिरा सरूप इन्दुबदनी अनूप रूप जोबन-उँजारी पियप्यारी परबत की ॥ ४७ ॥

अथ भुटन्तवधू वर्णन कवित्त ।

चेटक सी चाल चटकीलो रंग अंगनि कौं चोट सी चलावै डीठि गति है मतंग की । चु-म्बन की हाँसे उपजावति मयङ्कमुखी सारो सी पढ़त बैन दारौं दुति दन्त की ॥ सोहैं देव देव-तनि मोहै मुनिन्ह को मन कन्त को अखण्ड धन मोही रतिकन्त की । घन बन झारनि मैं स-घन पहारनि मैं दामिनि सी देखियति कामिनि भुटन्त की ॥ ४८ ॥

अथ काश्मीरवधू वर्णन कवित्त ।

जोबन के रंग भरे ईंगुर से अंगनि पै एड़िन लौं छबि छाजै केसन के भीर की । उचके उचौंहैं कुच भार झलकति झीनो झिलमिली ओढ़नी किनारीदार चीर की ॥ गुलगुले गोरे गोरे कोमल कपोल सुधाबिम्ब बोल इन्दुमुखी नासिका ज्यों कीर की । देव दुति लहरात छूटे छहरात केस कोरी जैसी केसरि किसोरी कास-मीर की ॥ ४९ ॥

अथ सौवीरवधू वर्णन कवित्त।

अम्भोविधि कासु तासो अम्भोजनि परदम्भो भोजन अदम्भो दित दुति है सरीर की। आरम्भित जोवन निदम्भ करै रंभा रुचि रंभोरु सुगंभीर गुराई गुन भीर की॥ चन्द से बदन मन्द हाँसी की अमच्छ विस्व स्याम मकरन्द बास चन्दन के चीर की। काम हय सुन्दरा सी देव काम कन्दरा सी इन्दिरा को मन्दिर सु सुन्दर सुवीर की॥ ५०॥

इति श्री रसविलासे कविदेवदत्तकृते जातिकर्मगुनदेस भेदादि नायिका वर्णनो नाम पंचमो विलासः॥ ५॥

दोहा।

रानी राधा हरि सुमिरि बानी देव प्रकास।
जातिकर्म गुनदेस तिय पंचम सुरसविलास॥१॥

अथ भेदनायिका वर्णन दोहा।

आठ अवस्था भेद करि होत आठ बिधि काल।
वरनी ता संयोग तें आठ भाँति की बाल॥२॥

प्रथम कहौं स्वाधीनपति कलहन्तरिता होइ ।
अभिसारिका बखानिये विप्रलब्धिका सोइ ॥३॥
खण्डिता रु उत्कण्ठिता बासकसज्जा बाम ।
प्रोषितपतिका नाइका आठौ बिधि अभिराम ॥

अथ स्वाधीनपतिका वर्णन दोहा ।

मनसा बाचा कर्मना जाकौं पति आधीन ।
सो कामिनि स्वाधीनपति पतिबस करै प्रबीन॥

कवित्त ।

जासौं हँसि एक बार एक बात कहिबे कौ हौंसन मरति कहौ को न ब्रजबाल है। सूधेई सु-भाइनि सुदास करि राख्यो हरि होत न उदास क्योहूँ एतौ भाग भाल है ॥ देव अब आस पूजौ तू जी मैं अदूजी बसी दूजी तिय भूलेंहूँ न देखत गुपाल है । पाय परि राखी अँखियानि भरि राखी हियरा मैं धरि राखी करि राखी कण्ठ-माल है ॥ ६ ॥

अथ कलहन्तरिता वर्णन दोहा ।

प्रेम अजीरन कोप जुर लंघन पिय संजोग ।
कलहन्तरिता है दुखी सहनैं बिथा बियोग ॥७॥

कवित्त ।

सखिन के सोच गुरु-सोच मृगलोचनि रि-
सानी पिय सौं जु उन नेक हँसि छियो गात ।
सहज सुभाइ मुसकाइ उठि गये इह सिसकि
सिसकि निसि खोयो पायो परभात ॥ कौन
जानै बीर बिनु बिरही बिरह-बिथा हाय हाय
करैं पछताय न कछू सुहात । बड़े बड़े नैननि तें
आँसू भरि भरि देव गोरो मुख भोरो भोरो ओरो
सो बिलानो जात ॥ ८ ॥

अभिसारिका वर्णन दोहा ।

आपुहिं तें उठि जो चलै तिय पिय के संकेत ।
निसि दिन तिमिर प्रकास कछु गनै न संगम हेत॥

कवित्त ।

सूझत न गात बीति आयो अधरात लखि
सोए सब गुरुजन जानि कैं बगर के । छिपि कै
छबीलो अभिसारि कों किवार खोले खुलिगे सु-
गन्ध चहूँ चन्दन अगर के ॥ देव कहै कुंजनि तैं
भौंर पुंजि गुंजि आये पूछि पूछि पीछे परे पा-

हरू डगर के। देवता कि दामिनी मसाल है कि जोति जाल भगरो मचत जगे सिगरे नगर के ॥ १० ॥

बिप्रलब्धावर्णन दोहा।

आपुहि तें संकेत बदि बोलि पठावै धाम।
मिलहि न जिहँ रतिसदन पति बिप्रलब्ध सो बाम॥

कबित्त।

गरे पटु रारि करैं केती मनुहारि दूतिकानि पग पारि प्रीति पूरन पकि रही। नौती नव नारि नयो नेह नव धारि लाज कीजहि बिसारि रूप छबि सो छकि रही॥ मिले न मुरारि आपही तें अभिसारि भेष भूषन सँभारि सूनें कुंजनि में जकि रही। मोचि दृग वारि सोच सोचति बिचारि देव चितें चहूं पारि घरी चार लौ चकि रही॥ १२॥

खण्डितावर्णन दोहा।

बास करै निसि जाय कहुँ प्रात मिलैं पति आइ।
नारि खण्डिता सौति के चिन्ह लखैं बिलखाइ॥

कवित्त ।

गात तें झरत फूल पलटे दुकूल अनुरागे उत जागे भाग इत बड़ भाग के । अंजन अधर उर बीच नख रेख लाल जावक तिलक भाल लाग्यो मधि मांग के ॥ भौंहैं कलसौहैं पलसौहैं पगे पीक रँग राति जगे रति मैन सदन सुहाग के । लालन लजात से जम्हात बिहँसात प्रात आए आली मेरे गृह टेत पेच पाग के ॥ १४ ॥

उत्कण्ठितावर्णन दोहा ।

पति आवन की रति-सदन जाकें होति अबार ।
सो उत्कंठित जो करै बहु बिधि सोच बिचार ॥

कवित्त ।

खरी दुपहरी हरी भरी फरी कुँज मंजु गुंजन अलिपुंजन की देव हियें हरि जाति। सीर नद नीर तरु तीरनि गहीर छांह सोवै परे पथिक पुकारें पिक करि जाति ॥ ऐसे मैं किसोरी भोरी को री कुमिलानो मुख पंकज से पाय धरा धीरज सौं धरि जाति । सोहैं धाम स्याम मग हेरति हथेरी ओट ऊँचे धाम धाम चढ़ि आवति उतरि जाति॥

बासकसज्जा वर्णन दोहा ।

पति आवन कौं रति-सदन जाकैं निहचै होइ।
सेज बेष भूषन रचें बासकसज्जा सोइ ॥ १७ ॥

सवैया ।

सुख सेजहिँ साजि सिँगार सजी गुहि बार सुगन्ध सबे बसि कै। चुनि चूनरी लाल खरी पहरी कवि देव सुवेस रह्यौ लसि कै॥ पिय भेटिबे कौ उमहो छतियां सु छिपावति हेरि हियो हँसि कै। अँगिया की तनी खुलि जात घनी सुवनी फिरि बाँधति है कसि कै ॥ १८ ॥

प्रोषितपतिकावर्णन दोहा ।

पति बिदेस क्यौंहूँ गयो आगम औधि ढिठाय ।
प्रोषितपतिका रैन दिन बिरह दसा अकुलाय॥

कवित्त ।

बालम-बिरह जिनि जान्यो न जनम भरि बरि बरि उठै ज्यों ज्यों बरसैं बरफराति। बीजनौं ढुरावती सखीं जन त्यौं सीतहूँ मैं सौति के सराप तन तापनि तरफराति॥ देव कहै स्वासनही

अँसुवा सुखाति मुख निकसै न बात ऐसी सि-
सकी सरफराति । लोटि लोटि परत करोट पट
पाटी लै लै सूखे जल मफरी ज्यौं सेज पै फर-
फराति ॥ २० ॥

अथ प्रवत्सतभर्तिका वर्णन दोहा ।

नारि प्रवत्सत भर्तिका नवमी करत बखानि ।
काल भेद नौ विधि कहत एक देस मत मानि॥

कवित्त ।

काल न परत कहूं लालन चलन कह्यौ बि-
रह दवा सौं देह दहकै दहकि दहकि । लागि
रही हिलकी हलक सूखि हालै हियो देव कहै
गरो भर्यो आवत गहकि गहकि ॥ दीरघ उसास
लेलै ससिमुखी सिसकति सुलफ सलौनों लंक
लहकै लहकि लहकि । मानत न बरज्यौ सुवा-
रिज से नैननि तें बारि को प्रवाह बह्यौ आवत
बहकि बहकि ॥ २२ ॥

आगमपतिका वर्णन दोहा ।

कही प्रवत्सतभर्तिका ज्यौंही नवमौ नारि ।
आगमपतिका त्यौं सुन्यो दसमी कहत विचारि॥

कवित्त।

आवन सुन्यो है मनभावन को भामिनि त्यों नैनन अनन्द आंसू ढरकि ढरकि उठै। देव दृग दोऊ दौरि जात द्वार देहरी लौं केहरी सी खासैं खरी खरकि खरकि उठैं॥ टहलैं करति टहलैं न हाथ पाइ रंग-महलैं विलोकि तनी तरकि तरकि उठैं। सरकि सरकि सासैं दरकि दरकि आँगी औचक उचौहैं कुच फरकि फरकि उठैं॥

अथ वहिक्रमभेद वर्णन—दोहा।

बाल बहिक्रमभेद के तीन भाँति की होइ।
मुग्धा मध्या प्रगलभा बरनत हैं सब कोइ॥२५॥

अथ मुग्धा वर्णन—दोहा।

लरिकापन भरपूरि कै उमगै जोवन जोति।
मुग्धा तिय को अङ्ग दुति दिन दिन दूनी होति॥

कवित्त।

जानि पर्यौ जोवन जनायो है मनोज जुर जगमगी जोति अङ्ग बाढ़ति निते निते। हरे हँसि हरि हरि लियो हरि जू को हियो हेरति

हिरननैनी हितू सों हिते हिते ॥ सीखी दिन चारिक तें तीखी चितवनि प्यारी देव कहै भरि दृग देखति जिते जिते । आछी उनमील नील सुभग सरोजन की तरल तनैनी मति तोरति तिते तिते ॥ २७ ॥

यथा ।

उसरि उरोज गिरि हरिद्वार हिरदै तें राख्यौ जिहिँ सागर गहीर नाभि झपिकै। ऐसी तरुनाई आई तासर तरङ्गन सो सिमुता ज्यौं सूरासत मिली चली चपि कै ॥ तामें मुह सोभा कहूं केस मिले पर्व सूतो सर्वस सुजान दीनो देव जपि जपि कै । होहूं ऐसे ठौर ठाढ़ौ काम पुरहेत पण्डि दीनो मन मानिक निसङ्क सङ्क लपि कै ॥ २८ ॥

अथ मुग्धा रहस्य वर्णन—कवित्त ।

औरन को गौनो हौं तौ विरह को औनो होत तुमही अँगौनी दुख देखनि दुखाई यह । एहो मृगलोचनि सकोचनि हो सोनो तजि सौनों

सीस धर देह सोचनि सुखाई यह ॥ आयौ दूत कौने कौ छिपायौ माँहि कौने कौने कौने धौं सिखाई विष ऐसी बिमुखाई यह । नीको करि जो तुम नु नीको करि देव पीको हीको करि राखौ धरि राखो हो उखाई यह ॥ २९ ॥

अथ मध्या वर्णन—दोहा ।

लरिकापन जोबन जहाँ दोऊ होत समान ।
लाज काम सम मध्यमा ताहो कहत सुजान ॥

सवैया ।

सावन मास सखीन मैं सुन्दरि मन्दिर तैं निकसी बनि ज्यौं ससि। देव जू देखि छकै छबि छैल रह्यौ न गयो हरि हारि हियो कसि॥ डारि सकोच कह्यौ सब ऊपर ऐसोही भाँति रही ब्रज मैं बसि। डीठ बचाय नवाइ कै सीस नचाइ कै नैनन चाइ गई हँसि ॥ ३१ ॥

अथ प्रगल्भा वर्णन—दोहा ।

लरिकापन तजि जो रहै तन जोबन भरिपूर ।
कहैं प्रगल्भा नायिका जग मे जीवनमूरि ॥३२॥

कवित्त ।

रेसमी सतूल साल लाल पट लीपे लेप भीत रैनि सौत रैनि कीन भीन भाँई सो । नीति नग हीरन गहीरनि की कान्तिनि सौं रगमगे खम्भपति दम्भ छवि छाई सो ॥ जगमगी हेज रगमगे देव देवपति अङ्ग जोति सम्पति औ अङ्गनि जगाई सो । जव में निदान हिमऋतु मनि मानिकनि अङ्गनि ताचामीकार अगिन तचाई सी॥

दोहा ।

मध्यनि संग उराहनौ मुग्धनि सिच्छा जानि ।
सुभग चेष्टा प्रगलभा तिहूँ मदा मुखदानि ३४॥

अथ मुग्धा की शिक्षा—पुनः मध्या सौ उराहनौ वर्णन ।

सवैया ।

वे दिन नाहि भटू भय के जब बातैं नई झुकि कै झिखईहौ । चौप दै दै चित मैं रस की दिन रातिन देव दुरै दिखईहौ ॥ ढीठ भई ढिग सोवन स्याम कै कामकला लिख ज्यौ लिखईहौ । आनहि क्यौं उर आनहूँ जू अब तो हरि सै सिखई सिखई हौ ॥ ३५ ॥

अथ सुभग चेष्टा वर्णन—कवित्त ।

औभल ह्वै आई झुकि उझकि झरोखा रूप-झार सी झलकि गई झलकन झाँई की । पैनै अनियारे पै सहज कजरारे दृग चोट सी चलाई चितवनि चतुराई की ॥ कौन जाने को हो उड़ि लागी डीठि मोही उर रहे अवरोही कोई निधि हो निकाई की । अब लगि आँखिनि को पूतरी कसौटिनि मैं लागि रही लीक वाके सोने सी गुराई की ॥ ३६ ॥

दोहा ।

ठाम वय:क्रम भेद करि भेद भेद प्रति भेद ।
होत अनेक प्रकार तैं सुनत हरत श्रुति खेद ॥३७॥

इति वय:क्रम भेद सम्पूर्णम् ।

अथ प्रकृतिभेद वर्णन—दोहा ।

प्रकृतिभेद करि नायिका त्रिबिधि कहत कवि लोय ।
तातें सो कफ पित्त अरु बात प्रकृति तिय होय ॥
सो कामिनि कफ प्रकृति जो रूप सील गुनवन्त ।
नेह चीकने बचन चित नैन केस नख दन्त ॥३८॥

सवैया ।

सील सलील सलौनी सुलज्ज सुभाइनि सज्जनता सरसाई। नेहभरे कच लोचन देह सुधा मधु तें बतियाँ अधिकाई ॥ दामिनि सी नख दन्तन की दुति देखतहूँ अँखिया न अघाई। अन्तर के अनुराग जितै पुनि ऊपरही सब देत दिखाई ॥

अथ पित्तप्रकृति वर्णन—दोहा ।

लाल दन्त नख नैन तन प्रथु कुच केस अराल ।
छमा क्रोध दिन मैं दुवौ पित्त प्रकृति सो बाल ॥

सवैया ।

बाल लसै नख दन्त कपोल सुवारिज ओठनु ऐंठि लचावति। भौंहनि भाइ सुभाइ बताइ कै बातनही सब गात नचावति ॥ औंचकही चुटकीन बजाइ कै गाय कै प्यारे सों प्रेम पचावति। हसि रहै कबहूँ रिस कै कबहूं रसना रस रंग रचावति ॥ ४२ ॥

अथ बात प्रकृति वर्णन—दोहा।

रूखे तन मन बचन कछु दूसर चञ्चल चित्त ।
भूरी बहु भोजन गमन बातल तिय रति मित्त॥

सवैया ।

रोष रुखाई भरी अँखियाँ रस राखै नहीं सखियानि सौं ढीठैं । भोजन भूर भरी मदन-झझार भूरे सेवारनि बानि अनीठैं॥ चञ्चलचित्त छकी मद सौं छिन एक न छाती तैं छाड़ति ईठैं । काम की घात अघात नहीं दिन राति-नहीं रतिरंग उबीठैं ॥ ४४ ॥

अथ सत्वभेद वर्णन—दोहा ।

सुर किन्नर अरु जच्छ नर कहि पिसाच अरु नाग।
सत्वभेद सो नायिका बरनहु खर कपि नाग ॥
तिनके लच्छन भेद सब जानहु नीब समान ।
है प्रसिद्ध संसार में जाति सुभाइ प्रमान ॥४६॥

अथ देवसत्व वर्णन—कवित्त ।

काम की कुमारी सी परम सुखकारी यह जाकी है कुमारी महा भाग वा जनक की। सलज सुसील सुलुनाई की सलाका सैल-सुता सौं सलोनी बैन बीना की भनक की ॥ एही अबहीं तैं बनदेवी ऐसी देखी देव देवी ते अगन गुनगन

हैं गनक की। कनक बनक तन तनक तनक मन भनक मनक कर कङ्कन कनक के ॥ ४७ ॥

अथ मनुष्य सत्व—कवित्त।

आई बरसाने तें बुलाई वृषभानसुता निरखि प्रभानि प्रभा भान की अथै गई। चक्र चकवानि के चुकाये चक्र चोटनि सों चौंकत चकोर चकाचौंध सों चकै गई॥ देव नन्दनन्दन के नैननि अनन्दमई नन्द जू के मन्दिरनि चन्द मई छै गई। कुञ्जनि कलिनमई कुञ्जनि अलिनमई गोकुल की गलिनि नलिनमई कै गई॥४८॥

अथ गन्धर्व सत्व वर्णन—दोहा।

सुन्दरि मन्दिर तें न कढ़ो कहू नैननि तें नहि लाज उमाची। काहू सिखाई न सीख कहूँ सखियानि सों सील सुभाइन साँची॥ देव जू देखे सुने नहि स्याम पढ़े बिन प्रेम की पद्धति बाँची। आनँद ते अनुरागभरी बनकुञ्ज में जाइ अकेलिये नाची॥ ४९ ॥

अथ जच्छिसत्व वर्णन—सवैया।

चञ्चल नैन बड़ी बरुनी कुटिलै भृकुटी सु लटें लटकारी। मोहनी सी मुसिक्यानि मनोहर चेटक सी बतियाँ सुखकारी॥ देव सुलच्छन बाल विचच्छन ऐसी न जच्छन नारि निहारी। बासव लच्छ छकै लखि लच्छन रूप विलच्छन लच्छनवारी॥

अथ पिसाच सत्व वर्णन—सवैया।

अन्तर खोलति नाहिँ अकेलिये डोलति ए नहि बोलति टेरैं। देखिये देव जितै तित ठौर ही ठाढ़ी रहै घर बाहरि घेरैं॥ कैतिक रूप करैं मग साम्हैं औ साम्हैं सुभात साँझ सबेरैं। नेह-भरी नव बाम दिखावति काम कै कौतिकधाम अधेरैं॥ ५१॥

अथ नागसत्व वर्णन—सवैया।

क्यौंहूं अघाति नहीं रति-रङ्गनि अङ्ग अनङ्ग बिलास चिलोई। पातरी सैन सटी भौ सटी सी नटी सी नचावै कटी गुन गोई॥ नागिली आँखिनि तंज गलें कहूँ गात मिलेहु न जात र-

होई । बात पिये जपिये गुर-मन्त्रनु ज्यों उससे रिस के बिस भोई ॥ ५२ ॥

अथ परसत्व वर्णन—सवैया ।

काम के काज न लागत लाज बुरे सुर बोलति डोलति दौरी । रूखिये खात नहीं अनखात भये दिन राति रही परि ढौरी ॥ लाजन दाँतन खात न छूरति केलि कुठौर करै टूक तोरी । देखो दलूसर मूसर से भुज धूरि भरे तन धूसर धौरी॥

अथ कपिसत्व वर्णन—सवैया ।

न्यारे में न्याइ अन्याइ करें कहूं क्यौंहूं पत्याइ नहीं अनकूलेंहूं । औचक चौंकि चले उछले छल छिद्रनि लाक छले प्रतिकूलेंहूं ॥ धीर धराति न पीर पिराति थिराति नहीं दिन राति झलेंहूं । भूरो सो भूरि भराव भराई सौं राई भरी यौं भराई न भूलेंहूं ॥ ५४ ॥

अथ काकसत्व वर्णन—सवैया ।

व्याकुल सो कुल सील उमेठि के है उमड़ो मड़राइ दिखावै । चञ्चलचित्त चितौति चहूं-

दिसि एको वरी घर चैन न पावै॥ औचक चौं-
कति बातनही निज बातनि घातनि बात चुकावै।
काक लौं काक कुवाक सुनाइ कै साधनि कै
गुन दोष बतावै॥ ५५॥

इति सत्वभेद सम्पूर्णम्।

दोहा।

आठ भेद करि नायिका बरनि कही इहि भाँति।
का पर बरनी जाति सो सकल रूप गुन काँति॥

इति श्रीरसविलासे कविदेवदत्तकृते कालभेद, वयःक्रम भेद, प्रकृतिभेद नायिकावर्णनम् नाम षष्टमोविलासः॥ ६॥

दोहा।

रानी राधा हरि सुमरि बानी देव प्रकास।
रसविलास वयकाल अरु प्रकृतिसत्व सविलास॥

अथ नायिकान के संयोग दश हावभाव वियोग दश दशानिरूपण वर्णन—दोहा।

इहि विधि बरनहुँ नायिका आठौं अङ्ग विभेद।
आदि अन्त सुख को प्रकृति जाहि बखानत वेद॥

सो मोहति नायिक सहित प्रति पूरुष संजोग ।
तन मन बचन अनन्त विधि करत करावत भोग॥
ताकी पिय-संजोग मैं उपजत हैं दश हाव ।
अरु वियोग मह दसा दस दारुन विरह सुभाव॥

अथ नायिका नायक संजोग वर्णन ।

दशहावनिरूपन—दोहा ।

लीला और विलास भनि औ विच्छिति विलोकु।
विभ्रम किलकिंचित बहुरि मोटाइत विब्बोकु॥५॥
कह्यौ कुट्टमित अरु विहृति ललित कह्यो दशहाव।
तिय के पिय संजोग मैं उपजत सहज सुभाव॥६॥

अथ लीलाहाव लक्षण—दोहा ।

कपट भेष भाषानि के लीला मे रस हास ।
सरसभाव तन मन बचन रुचि को रचन विलास॥
लघु मण्डन विच्छिति मैं मन अभिमान विसेष।
विभ्रम सो जु प्रसाद तें उलटे भूषन भेष ॥८॥
किलकिञ्चित इकबार भय मुदमद रम रिस मानि।
मिलि कपट मोटाइत मन बच आनत आनि॥
मन मैं सुख सङ्कट कपट प्रगट कुट्टमित हाव ।
पिय सदोष विब्बोक बहु दृग भौंहानि के भाव॥

अपनी गो मिस लाज कुल त्रिलज मान तन मान।
ललितस रस रचना ललित बरनत नृकवि सुजान ॥

अथ लीलाहाव लक्षण—कवित्त ।

राजपौरिया का रूप राधे कों बनाय लाई
गोपी मथुरा ते मधुबन की लतानि मैं । टेरि
कह्यो कान्ह सों चलो जू कंस चाहे तुमें काके
कहें लूटत सुने हों दधि दान मैं ॥ संग के न
जाने गये डगर डराने देव कान्ह सकुचाने से
पकरि कौने पानि मैं । छूटि गयी छल मो छ-
बीलो को बिलोकनि मैं ढीली परी भौंहैं वा
लजीली मुसकानि मैं ॥ १२ ॥

अथ विलासहाव वर्णन—कवित्त ।

सहर सहर सोंधो सीतल समीर डोलें घहर
घहर घन घेरि के घहरिया। झहर झहर झुकि
झीनी झर लायौ देव छहर छहर छोटी बूँदनि
छहरिया ॥ हहर हहर हंसि हंसि के हिंडोलें
चढ़ैं थहर थहर तन कोमल थहरिया । फहर
फहर होत प्रीतमु को पीटपट लहरि लहरि
होत प्यारी को लहरिया ॥ १३ ॥

अथ विच्छित्तिहाव लक्षण—सवैया।

छूटे छवानि लौं केस विराजत बार बड़े तमतार हने से। लोचन कञ्ज से खञ्जन से दुख-भञ्जन देखत जे कहने से॥ कुन्दन सों तन जोबन जोति जवाहर से पिय के लहने से। रंग भरे तेरैं अंग भटू विलसें विनही गहने गहने से॥

अथ विभ्रमहाव लक्षण—कवित्त।

आई उठि सेज तें सुजान संग जागी निसि नींद निन्दनहि लागी नींद न परति हैं। देव सुनै बोलनु बुलाये बिन बोलि उठै बौरई मै औरई की औरई धरति है॥ दासी मिस रोइ रोइ सौतैं उरहनो दै दै झूठें उरहनो देखैं छतियाँ बरति है। अनखुन लागत अनोखी कुलटेव सीखी उलटे बसन पैन्हि उलटे करति है॥१५॥

अथ कलकिञ्चितहाव लक्षण—कवित्त।

धोखे धाइ धाइ धाम आई नव बाम मिले सीखी मिस देव स्याम मानो रंगराति है। चौंचकही चौंचकै निसङ्क भरि अङ्क प्यारी पाटी

परजङ्क साँस सकि अकुलाति है ॥ गातनि मैं दुतिराति बातनि मैं सतराति भौंहनि हँसाति अँखियानि मै रिसाति है। झारैं कर झुरी उर काम जुर झुरी लेत लाज फुरहरी रस घुरी ढुरी जाति है ॥ १६ ॥

अथ मोटाइतहाव लक्षण—सवैया।

सोहती हौ तुमही ब्रज भूपर रूप रच्यौ सब ऊपर चोखौ। चाय सों खेलती खेल सखी तुम्हें देख्यौ नहीं मुख रञ्चक रेखौ ॥ बालम त्यौं न बिलोकती बोलती अन्तर खोलती ना करि ओखौ। जानि परै न विराग सुहाग तिहारौ भटू अनुराग अनोखौ ॥ १७ ॥

अथ बिब्बोकहाव वर्णन—सवैया।

काम तमासे कहूँ निस कालिह की टेव बसे घन सौ मन जोटैं। लोपक कोपक पच्छ परे हुत आवत भोरही भौंहनि ओटैं ॥ नैन तुरङ्ग नचाइ अचानक ये करि तीखे कटाच्छ की चोटैं। मानहु मान के गाँवही लूटिगे प्रीतम साह के प्रेम की पोटैं ॥ १८ ॥

अथ कुट्टमितहाव लक्षण—कवित्त ।

बंसीबट जमुनाजी तट के निकट कहूँ खेलति कुँवरि राधा सखिन की पुञ्ज मैं । रसिक कन्हाई आइ बाँसुरी बजाई सुनि धुनि कै रही न मति गति मन लुञ्ज मैं ॥ चलि न सकति ब्रन्दावन की गलिन बीच खञ्जननलिननैनी अलिनि की गुञ्ज मैं । देव दुरी जाय अकुलाय ससमित सुखी कुसमित बकुल कदम्ब कुल कुञ्ज मैं ॥ १६ ॥

अथ ललितहाव लक्षण—कवित्त ।

चाँदिनी महल बैठी चाँदिनी के कौतुक को चाँदिनी सी राधे छिकी चाँदिनी बिसालरैं । चन्द्र की कला सी देवता सी देव दासी संग फूल से दुकूल पैन्हैं फूलनि की मालरैं ॥ छूटत फुहारे वे अमल जल झलकति चमकैं चँदोआ मनि मानिक महालरैं । बीचि जरतारनि की हीरनि के हारनि की जगमगी जोतिनि की मोतिन की झालरैं ॥ २० ॥

दोहा।

हावभाव संजोग मे उपजत और अनेक ।
तिन मैं सूक्षमसार गहि दश विधि बरनत एक ॥
इहिं विधि दसौं प्रकार के हाव होत संजोग ।
अब दम्पति को दश दसा बरनौं विहित वियोग ॥
पिय वियोग मैं दस दसा होइ दम्पती माहिं ।
जिनते तिनके तननि मै एको पल कल नाहिं ॥
प्रथम कह्यौ अभिलाष अरु चिन्ता सुमिरन होइ ।
तातैं बरनौं गुनकथन फिरि उद्वेग सुसोइ ॥२४॥
परलाप रु उन्माद कहि जड़ता व्याधि बखानि ।
मरन कहत दसई दसा कवि कोविद जिय जानि ॥

अथ अभिलाष लक्षण—दोहा।

इच्छा जो पिय संग की सो अभिलाष प्रमान ।
पिय चिन्तन चिन्ता कहैं पिय सुमिरन को ध्यान ॥
पियगुणवर्णन गुण कथन अरु पिय विरह अनेक ।
भलो वस्त नागा लगै सो कहिये उद्वेक ॥ २७ ॥
विरहिनि बौरी ह्वै बकै सो प्रलाप पहिचानि ।
करत कहत जानैं न कछु सो उन्माद बखानि ॥

पिय बिरहज्जुर व्याध कहुँ जड़ताजड़ ह्वै जाइ।
मरन मूरछा एकही बिरह दसा दस भाइ॥२९॥

अथ अभिलाष – दोहा।

श्रवनोत्कण्ठा दरसन लाज प्रेम करि भाष।
होत परसपर पांच विधि दम्पति के अभिलाष॥

अथ श्रवणाभिलाष वर्णन सवैया।

कोई अचानक आनि कह्यौ मनमोहन की बतियाँ अति मीठी। देव तिन्है सुनि सुन्दर को हरि देखन को मनु दैन बसीठी॥ एकही बार चक्यौ उचक्यौ चित आँखिनि लागै सखी सब सीठी। पूरि रहे गुन रूपही नैननि काननि केलि कहानी उमीठी॥ ३१॥

अथ उत्कण्ठ अभिलाष—सवैया।

मोहन-रूप चढ़ौ चित मैं हित भोजन भूषन भाँति न भावति। देखन को खिन खीनहि खीन सखीन सौं देव न जी को जनावति॥ भूलि गयो गुड़ियान को खेल झरोखनि झाँकति द्यौस गँवावति। बाल गने न अवार सवारक बारहि बार किवार लौं आवति॥ ३२॥

अथ दर्शनाभिलाष—सवैया।

कान्ह कढ़े वृषभान के द्वार ह्वै खेलन खोरि पिछावर घाँकी। भीतर भौन तैं सामुहैं लाल की बाल बिलोकि बिलोकनि बाँकी॥ हेरी न देव सु घेरो घनै दुख चेरी कौं पूछति बात पिया की। पौरि लौं जाइ फिरी अकुलाइ अटा चढ़ि धाइ झरोखा ह्वै झाँकी॥ ३३॥

अथ लज्जाभिलाष—सवैया।

मूरति जो मनमोहन को मनमोहनी के मन ह्वै थिरकी सी। देव गुपाल को बालु सुनै छतिया सियराति सुधा छिरकी सी॥ नाकैं झरोखा ह्वै झाँकि सकै नहि नैननि लाज-घटा घिरकी सी। पूरन प्रीति हियें हिरकी खिरकी खिरकीनि फिरै फिरकी सी॥ ३४॥

अथ प्रेमाभिलाष लच्चण—सवैया।

बीसौ बिसे वृषभानसुता पै हौं जानति कान्ह जियो कछू टौना। काहू कह्यौ बरसानै ते री नंदगाँव चल्यौ अब स्याम सलौना॥ खेलति ही

कि अचानक चौंकि चितै चहुँ देव दिये दृग कौना । मूल उठ्यौ तन फूलि गयौ मन भूलि गयौ सब खेल खिलौना ॥ ३५ ॥

अथ चिन्ताभिलाष वर्णन – दोहा ।

दम्पति के अभिलाष तैं चिन्ता बढ़ै अपार ।
गुप्त सङ्कल्प अरु कह्यौ बिकल्प चारि प्रकार ॥

सवैया ।

रूँधिहू नैन लखैं न तबै अब पैये कहाँ जब चाहत हेरौ । कान करै जहिं कान सबै बिबि कान लगै अकुलान घनेरौ ॥ लाजहि जाय मिलै उत पै इति माहि मिलै मग मेटत मेरौ । मेटौं मनोरथही इनके तो मिटैं मन मेरे मनोरथ तेरौ॥

पुनः गुप्तचिन्ता वर्णन—कवित्त ।

कोटि कला उलटैं पलटैं पलही पल ज्यौं मृग बागरि के। बहु तर्क बिलास चढ़ै चित बाल पै देव सरूप उजागरि के ॥ गति बङ्क निसङ्कही नाच करैं गुन डोरि गहे गुनआगरि के । नव नेह लग्यौ नटनागर सौं दोउ नैन भये नट नागरि के ॥ ३८ ॥

सङ्कल्पचिन्ता वर्णन सवैया ।

कछु और उपाइ करौ जिनि री इतने दुख लौं सुख सो मरिबो। फिरि अन्तक से बिन कन्त बसन्त सु आवत जीवतुही जरिबो ॥ बन बौरत बौरी ह्वै जाउँगी देव सुनै धुनि कोकिल को डरिबो। जब डोलिहैं और अबीर भरी सु हाहा कहि बीर कहा करिबो ॥ ३९ ॥

अथ विकल्पचिन्ता वर्णन—कवित्त ।

खोरि लौं खलन आवतिये न तौ आलिन के मत मैं परती क्यौं । देव गुपालहिँ देखति ये न ता या विरहानल मैं बरती क्यौं ॥ बापुरी मंजुल आँम की बाल सु भाल सी ह्वै उर मैं अरती क्यौं । कोमल वालि कैं कोलिया कूरि करेजनि की किरचें करती क्यौं ॥ ४० ॥

इति चिन्ता वर्णन सम्पूर्णम् ।

अथ सुमिरन भेद वर्णन—दोहा ।

स्वेद तम्भ रोमांच सुरभङ्ग कम्प वैवर्न ।
अश्रु प्रलय सुमिरन विषय सात्विक आठौ वर्न ॥

अथ स्वेद सुमिरन वर्णन—सवैया।

डूँगुर सौं मिलि जात पसीजत अंग सुरंगन चोलनि पै। कवि देव कछू मुलकै पुलकै उर कै उर प्रेम कलोलनि पै॥ हँसि बोलै न बाल बिलोकै न आलिन झाकै नहीं दृग डोलनि पै। ललकैं अँखियाँ पलकैं न लगैं झलकैं जलबुंद कपोलनि पै॥ ४२॥

अथ स्तम्भ सुमिरन वर्णन—सवैया।

अंग न डोलैं उतंग फिरैं उर ध्यान धरै बिरहज्जुर बाँधति। नासिका अग्र की ओर दियैं अधमुद्रित लोचन कोर समाधति॥ आसन बाँधि उसास भरै अब राधिका देव कहा अवराधति। भूलि गौ भोग कहैं लखि लोग वियोग किधौं यह जोगहि साधति॥ ४३॥

अथ रोमांच वर्णन—कवित्त।

हरषि हरषि हिय मन्द बिहँसति तिय बरषि बरषि रस राचे चित चोज है। मुलकि मुलकि स्याम स्याम सुमिरत देव पुलकि पुलकि उर उठत उरोज है॥ फरकि फरकि बाम बाहु फुर-

हरी लेति खरकि खरकि खुलै मैन सर खोज है। छलकि छलकि छवि छलकनि पलकनि ललकि ललकि मूँदैं लोचन सरोज है ॥ ४४ ॥

अथ सुरभङ्ग वर्णन—कवित्त ।

धरि बैठी ध्यान करि बैठी मूढ़ ग्यान जानि जिय ज्यान मोह मोह मो हिय मढ़त हैं। मूँदि मूँदि लोचन चितौति नींद लोचन कै मोचत सकोच सोच सकल बढ़त हैं॥ भूली भूख प्यास बास हाँस तैं उदास देव देखि दासी दास आस पास तें डरत हैं। कौन जानें मौन धरि को है अवराधै अव राधि मुख आधे आधे आखर कढ़त हैं ॥ ४५ ॥

अथ कम्प स्मरण—कवित्त ।

प्रेम के प्रकास आसपास की परोसनि यों पूछि पूछि जात पछिताती सबै अलिका। कैसी है कुँवरि कासों कहिये कहाधौं भयो काहू कछू कीनों कै कुबोल बोल्यो बलिका ॥ सोवै न चिजाम भरी स्याम सुमिरत कहि बोलति बि-

लोकति न पौढ़ति न पलिका । भाँपि भाँपि खोलै भपकारे दृग भारे देव काँपि काँपि उठैं कुच कौल की सो कलिका ॥ ४६ ॥

अथ वैवरण्यस्मरण वर्णन—कवित्त ।

मोहन की मूरति सो मोही मनमोहनी सु मोहि महामोह व्योह मो हिय मढ़ाइयतु । भौंर भौंर भीतर सरोज फरकत ऐसी अधखुली अँखियानि उपमा बढ़ाइयतु ॥ आलिन की आन उर आनी तन आनी आन करत न कानही सयानही पढ़ाइयतु । लोनी मुखमण्डल पै पंडल प्रकास देव जैसे चन्दमण्डल पै चन्दन चढ़ाइयतु ॥

अथ अश्रुस्मरण—कवित्त ।

आई नहीं तन में तरुनाई भई नहि स्याम के संग सजोगनि । कौनै सिखाई सखीधौं कहा सुमिरै धरि ध्यान जनो जुग जोगनि ॥ आँखिनि तैं अँसुवा नहि सूखत एकही बार ह्वै बैठी वियोगनि ।

अथ प्रलयस्मरण वर्णन—कवित्त ।

सूधेहू न खेल खेलि जानतिही काल्हिहू लौं

काहे को सयानो बानी बोलति है तूतरी। आपु ही तैं आजुही सयान सीख्यो सीखी सखी सारदा कि राधा के असीस सीस उतरी॥ अधमुँदी आँखियनि खोलति न बोलति न डोलति न साँस चित चाल्यो अद्भूतरो। कौने हरि मित्र लीने बिरह दसाचरित्र बैठी है बिचित्र रूप चित्र की सी पूतरी॥ ४९॥

अथ साधारणभरण—कवित्त।

रचित महावर सों कञ्ज से चरन मञ्जु गूंजरी बजनि अजौ काननि जगी रहै। आँचर उचौहै कुच नच लचकीली कञ्चन सी देह दुति देव उमगी रहै॥ भूलति न भाँवती की भाँति रती रम्भा को सो सूधी सी सुधानिधि सी सौंधें सी पगी रहै। आँखिन न देखैं तौलौं आँखिन न लागे पल बड़ी बड़ी आँखिनि की आँखनि लगी रहै॥५०॥

घाघरी घनेरी लाँबी लटैं लङ्कपातरे पै काँकरेजी सारी खुली अधखुली टाड़ वह। लोनी गजगौनी दिन दूनी दुति हौनी देव लागनि स-

लोनी गुरु लोगन की लाड़ वह। चञ्चल चितौंनि चुभि रही चित चोरवारी बेसरि औ केसरि की आड़ वह ॥ गोरे गोरे गोलनि की मृदु हँसि बोलनि की कोमल कपोलन की जी मैं गड़ी गाड़ वह ॥ ५१ ॥

इति सात्विकाष्ट भेद सम्पूर्णम् ।

अथ गुन कथन वर्णन—दोहा ।

सुमिरि परसपर दम्पती रहति सरस रस पागि ।
विरह कथन मन गुन कथन बहु बरनत अनुराग ॥
हरष ईर्षा होइ अरु कहियतु चित्त विमोह ।
अस्मार अरु गुन कथन चारि भाँति करि टोह ॥

अथ हर्ष गुण कथन—सवैया ।

देव मैं सीस बसायो सनेह कै भालु मृगन्मद बिन्दु कै भाख्यो । कञ्चुकी मैं चुपर्यो कर चोवा लगाय लयो उर मैं अभिलाष्यो ॥ लै मखतूल गुहे गहने रस मूरति वन्त सिङ्गार कै चाख्यो । साँवरे लाल कों साँवरो रूप मैं नैननि को कजरा करि राख्यो ॥ ५४ ॥

अथ ईर्षा गुनकथन वर्णन—कवित्त ।

कैसेहूँ कोऊ करौ उपहास हौं नीकें ही नाचति नेह नटू हौं । औ गुनहाई किधौं गुन देव करौ गुन जाल लपेटि लटू हौं ॥ चातक लौं घनस्याम के रूप अघाति नहीं दिन राती नटू हौं । दूसरो काज न लोक की लाज भई ब्रजराज की भाट भटू हौं ॥ ५५ ॥

अथ बिमोह कथन—सवैया ।

ग्वालि गई इक झाँकि वहां मगि रीझी सुनी मिसु कै दधि दान की । बातैं भटू वह भेटी भुजा भरि नातौ निकासि कछू पहचानि की ॥ आई निछावरि कै मन मानिक गोरस दै रस लै अधरानि की । वाही दिना ते हिये मैं गड़ो वह ढीठ बड़ी री बड़ी अँखियानि की ॥ ५६ ॥

अथ अपस्मार गुन कथन वर्णन—कवित्त ।

ना खिन टरत टारे आँख न लगत पल आँखिन लगे री स्यामसुन्दर सलौन से। देखि देखि गातनि अघात न अनूप रस भरि भरि रूप लेत

लोचन अचौ से॥ एरी काहुँ को हौं हौं कहाँ हौं कहा करति हौं कैसे बन कुञ्ज देव देखियति भौन से। राधे हौं सदन बैठी कहती हौं कान्ह कान्ह हा हा कैसे हैं कहाँ हैं को हैं कौन से॥५७॥

इति गुन कथन सम्पूर्णम्।

अथ उद्देग दसा वर्णन—दोहा।

दम्पति करि करि गुन कथन भरि भरि रस आवेग।
पूरन प्रेम वियोग तैं प्रगटै उर उद्वेग ॥ ५८ ॥
भली बस्तु नागा लगै काहूँ भाँति न चोत।
वै उद्देग सुवस्तु अरु देस काल करि होत॥५९॥

अथ वस्तु उद्देग—सवैया।

बेष भये बिष भावै न भूषन भूष न भोजन की कछु ईछो। मीच के साधन सौंधे की साध न दूध सुधा दधि माखन छीछो॥ चन्दन त्यौं चितयौ नहि जात चुभी चित माहिँ चितौनिं तिरीछी। फूल ज्यौं सूल सिला सम सेज बिछौननि बीच बिछो मनु बीछी॥ ६० ॥

अथ देश उद्वेग—सवैया ।

घोर लगै घर बाहरिहूँ डरनूत पलास लसैं उजरे से । रङ्गित भीतिन भीति लगै लखि रङ्ग मही तरन रङ्ग ढरे से ॥ धूम जटा गरु धूमन की निकसे नव जालिनि व्याल भरे से । ए गिरि-कन्दर से मनि-मन्दिर आज अहो उजरे उजरे से ॥

कालोद्वेग वर्णन—कवित्त ।

कन्त बिनु बासर बसन्त लागे अन्तक से तीर ऐसे त्रिविधि समीर लागे लहकन । सान धरे सार से चन्दन घनसार लागे खेद खरे लागे मृगमद लागे महकन ॥ फाँसी से फूलेल लागे गाँसी से गुलाब आब गाज ऐसे अरगजा चोवा लागे चहकन । अङ्ग अङ्ग आगि ऐसे लागै हैं के-सरि नीर चीर लागे जरन अबीर लागे दहकन ॥

इति उद्वेग कथन सम्पूर्णम् ।

अथ प्रलाप वर्णन—दोहा ।

दम्पति के उद्वेगहू बैठि बिरह सन्ताप ।
उत्कण्ठित चित प्रेम जिय पेख्यो प्रगट प्रलाप ॥

सात भाँति बहु बाद सौं होत ग्यान बैराग ।
उपदेस प्रेम संशय कहूं भ्रमनि आप बड़ भाग ॥

अथ ग्यान प्रलाप वर्णन—कवित्त ।

देखे अनदेखे दुखदाई भयौ सुखदान सूखत न आँसू मुख सोइबो तरे पर्यौ। पानी पान भोजन सुजन गुरजन भूले देव दुरजन लोग लरत खरें पर्यौ ॥ लागे कौन पाप पल एको न परत कल दूरि गौ गहन यौं सुनेह निपरे पर्यौ । होती जौ अजान तौ न जानती इतीक बिथा मेरे जिय जानि तेरो जानिबो गरे पर्यौ ॥ ९५ ॥

अथ बैराग प्रलाप—कवित्त ।

तेरो कह्यौ करि करि जीव रह्यौ जरि जरि हारी पाइ परि परि तै न कीनी सम्हार । ललन बिलोकि देव पल न लगाये तब यौं कल न दीनी तैं छलन उछलनहार ॥ ऐसे निरमोही सौं सनेह बाँधि हौं बँधाई आप बिधि बूड्यौ व्याधबाँधा सिन्धु निराधार । एरे मन मेरे तैं घनेरे दुख दीने अब एकै बार लै कै तोहिं मूँदि मारौ एकबार ॥ ९६ ॥

बोरयौ बंस बिरद मैं बौरी भई बरजति मेरे बार बार बार बीर कोऊ पैठौ जिनि। तुमही सयानी बीर बिगरी अकेली हौंही गोहन मैं छाड्यौ मोसौं भौंहनि अमैठौ जिनि॥ कुलटा कलङ्कनि हौं कायर कुमति कूर काहू के न काम की निकाम यौंही ऐठौ जिनि। देव तहाँ बैठियतु तहाँ बुधि बैठें हो ता बैठी हौं बिकल कोउ मोहि मिलि बैठौ जिनि॥ ६७॥

अथ उपदेश प्रलाप वर्णन, तथा प्रेमपचीसी में वैराग सत्य कह्यौ है—कवित्त।

प्रेम की पीर न जानी तैं बीर जु छैल कटाछिह सौं करि छ्वै है। देव तुही चसिहै हँसिहै बलि बावरो ह्वै रस ही रस च्वैहै॥ आई तौ सीख सिखावन को पै सखी सुनि आपनीयौ मति जैहै। मोही सी मोही सी मोही कहै अभै नेक मै मोही सी मोही सी ह्वैहै॥ ६८॥

अथ प्रेमप्रलाप वर्णन—सवैया।

कान्हमई वृषभानसुता भई प्रीति नई उनई

जिय जैसी । जाने को देव बिकानो सो डोलै लगै गुरलोगन देखि अनैसी ॥ ज्यौं ज्यौं सखी बहरावति बातनि त्यौं त्यौं बकै वह बावरी ऐसी। राधिका प्यारी हमारी सो तू कहि काल्हि को बैन बजाई मैं कैसी ॥ ६९ ॥

अथ संसयप्रलाप वर्णन—कवित्त ।

मोही सबै किधौं हौ उनही मैं कि हौं अरु वे इक सङ्ग लसेई। बाहरि भीतर ही तरह्व दि-हरी तर देखी सुठौर ठयेई ॥ काहे को लाज लजाइ री को अब गोकुल गेह सनेह पगेई । देख्यौ सुन्यौं नहीं दूसरो देव जिते तित जाऊँ तितै चित वेई ॥ ७० ॥

अथ विभ्रमप्रलाप—सवैया ।

आज भलैं गहि पाये गुपाल गुहौं गहि लाल तुम्हैं गुन लालहि। हौन न देव कहूँ चलि चाल बसे व हिये मैं मिलाइ कै मालहि ॥ बोलत काहे न बोलि रसाल है जानति भाग भरे निज बालहि । सींचत नैन बिलासनि के जल बाल सु भेटति बाल तमालहि ॥ ७१ ॥

अथ निश्चय प्रलाप वर्णन—कवित्त।

काहू की कोक कहां बलि हौं नहिं जाति न पाति न जातें खिसौंगी। मेरोई हाँस करो किनि लोग हौं को कहि देवजू काहू हँसौंगी॥ गोकुलचन्द की चेरी चकोरी हौं मन्द हँसी मृदु फन्द फँसौंगी। मेरी न बात बको बलि कोऊ में बौरिय ह्वै ब्रज बीच बसौंगी॥ ७२॥

इति प्रलाप सम्पूर्णम्।

अथ उन्माद वर्णन—दोहा।

प्रेम विकल बकि बकि थकै बाढ़ै बिरह बिषाद।
बिन विचार आचार जिहँ सो प्रगटै उनमाद॥
मद विमोह अरु बिसमरन कहि विक्षेप विक्षोह।
पाँच भाँति उन्माद कहि जहां भूरि भ्रम मोह॥

अथ मदन उन्माद वर्णन—कवित्त।

धुनि धुनि सीस धुनि सुनि बाँसुरी की देव चुनि चुनि चितउ करत चित चारी सी। टनि टनि टूनै दुख सूनै में सकल सुख लूनै बिन ज्ञान काटी मोह की कुठारी सी॥ रची रुचि रङ्ग सौं उघरि

नची अङ्ग अङ्ग को करै सु काज लोक लाज हि बिडारी सी। बावरी ह्वै बोलै न सम्हारति न बोल ब्रज बीथनि मैं डोलै मुख खोलै मतवारी सी॥७५॥

अथ मोह उन्माद वर्णन—कवित्त।

जबतें कुवर कान्ह रावरी कलानिधान कान परी वाकै कहूँ सुजस कहानी सी। तबही तें देव देखी देवता सी हँसति सी रीझति सी खीझति सी रूसती रिसानी सी॥ छोही सी छली सी छीनि लीनो सी छकी सी छिनि जकी सी टकी सी लगी थकी थहरानी सी। बाँधी सी बँधी सी विष बूड़ति विमोहति सी बैठी बाल बकति बिलोकति बिकानी सी॥ ७६॥

अथ विस्मरन उन्माद वर्णन—सवैया।

मोहनलाल लखे कहुँ बाल वियोग की ज्वालनि सौं तन डाढ़ति। लागि गई अँखिया चित-चोरन भागि गई गुरु लोग की गाढ़ति॥ और की और कहै सुनै देव महा दुचिताई सखीनि कै बाढ़ति। नाव लिये मुख और चितै रहै सो घरीकि मैं घूँघट काढ़ति॥ ७७॥

अथ विक्षेप उन्माद वर्णन—कवित्त।

चलि चलि मोसैं कहै चलि चलि होति
कित विचलि विचलि बलि परति विथकि थकि।
रूसि रूसि हँसि हँसि खीजि खीजि आवैं खरी
रीझि रीझि जाइ छोह छोहि छवि छकि छकि॥
काहि तकि तकि चित कित कित हिय ठायौ
देव कहै रहै कौन विथा सौं विथकि थकि।
बिनही विचार कै बचन बिन बूझैं बीच बहकि
बहकि बिन काज उठै बकि बकि॥ ७८॥

आक बाक बकति विथा मैं बूड़ि बूड़ि जात
पी की सुधि आयें जी की सुधि खोइ खोइ देति।
कोह भरी कुहँकि बिमोह भरी मोहि मोहि
छोह भरी छिति पै छलीसी रोइ रोइ देति॥ बड़ी
बड़ी बार लगि बड़ी बड़ी आँखिन तें बड़े बड़े
अँसुआ हिये में मोइ मोइ देति। बाल बिन बा-
लम विकल बैठी बार बार वपु मैं विषम विष-
बीज बोइ बोइ देति॥ ७९॥

अथ व्याधि भेद वर्णन—दोहा।

अति प्रलाप उनमाद तें अन्तर उपजै व्याधि।
जल भोजन सुख सयन बिन बाढ़ति वपु मैं व्याधि॥

तीन भाँति की व्याधि सों प्रथम होइ सन्ताप ।
दूजो कहियतु ताप तें तीजो पश्चाताप ॥ ८१ ॥

अथ सन्ताप व्याधि भेद वर्णन—कवित्त ।

हाहा हौं करति मेरो कह्यो करि मेरी बीर पवन अब न धावैं धीर न धरत धाम । देव घनस्याम बिन जोबन दवा सो जरै ग्रीषममही सी हौं जरीये जात आठौ जाम ॥ आयो बैरी मधु वधु कीनो कौन व्याधनो कीं काल भई कोकिला छपाकरन होतु छाम । ताही कूं कपावन् बस करे जिन बालम वे भरे जानि कँपावै मो करेजनि कुटिल काम ॥ ८२ ॥

अथ अति व्याधताप वर्णन—कवित्त ।

साँझ कौ सो चन्द भोर को सो करि राख्यो मुख भोर को सी कान्ति साँझ की सी अब भई आनि । साँझ भोर कौ सौ नभ देखिये मलीन मन साँझ भोर चकवा चकोर की सी हितहानि ॥ कैसें करि कासों कासौं कहौं कैसी करौं देव कीनी रिपु कैसो केसू को सो केसु कैसो बानि । कैसी

लाज कैसौ काज कैसौ धौ सषौसमाज कैसौ धन कैसौ वन कैसौ डर कैसौ कानि ॥ ८३ ॥

अथ पश्चाताप वर्णन—कवित्त ।

सूधैंही सिखाइ के सखीनि समुझाई होति देव स्यामसुन्दर के सौंहैं समुहाती क्यौं । विचर विचरि बीचि बैरीन मुकत होते बिरहै की वेदना विकल बिलखाती क्यौं ॥ जगमगे जौंनि ज्वाल जारन सौं जारती न जमजाई जामिनि जुगन सम जाती क्यौं । कैलिहाई कलिया की काल ऐसी कूँकै सुनि कौल की सी कलिका कु-वरि कुँभिलाती क्यौं ॥ ८४ ॥

अथ मरन वर्णन—दोहा । अथ जड़ता वर्णन—दोहा ।

व्याध बढ़त बाढ़ै बिथा बिन भोजन बिन नीर ।
निस दिन छिन छिन छीन ह्वै जड़ ह्वै रहत सरीर ॥

कवित्त ।

कमल सु नैंन जारे जियत सु नैंन तुम तब तैं सु नैंन स्यामा सखिन के सोर ए । लागत न जन्त्र मन्त्र तन्त्र परतन्त्र परी कान परे देवगन

मन्त्र चित चोर ए॥ रावरोई रूप रमि रह्यो वाके रोम रोम छैल छेद छाती मैं कटाछिन के छोर ए। लाग्योई रहति वाहि लालन तिहारो नेहु अद्भुत भूत जिन पाचौं भूत भोर ए ॥ ८६ ॥

अथ मरन वर्णन—दोहा।

दसई अवस्था मूरछा कहूँ मरन ह्वै जात ।
नीरस जानि न बरनिये जीवन अति सरसात॥

कवित्त।

केलि के बगीचे लौं अकेली अकुलाइ आई नागर नवेली वेली हेरत हहरि परी। कुञ्ज पुञ्ज तीर तहां गुञ्जति भँवरभीर सुखद समीर सीरे नीर की नहरि परी॥ देव तिहिं काल गुहि माल लाई मालिनी सुबाल कों बिरह बिष व्याल के लहरि परी। छाँह भरी छरी सी छबीली छिति माहि फूल छरी कै छुवति फूल छरी सी छहरि परी ॥ ८८ ॥

दोहा।

रसबिलास सिङ्गार रस सरस अपूरब ग्रन्थ ।
कह्यो देवकवि भेव सौं रीति पुरातन पन्थ॥८६॥

कवित्त ।

बीच मरीचनु के मृग लौं अब धावै न रे सुन काह्न नरिन्द के। ओस की आस बुझै नहीं प्यास बिसास डसै जिनि काल फनिन्द के ॥ भूलै न देव निहारि असारनि प्यास निसारत तार के बिन्द के । इन्दुसौं आनन तू जु चितैं अरविन्द से पापन पूजि गुविन्द के ॥ ९१ ॥

दोहा ।

जै जै श्रीव्रजकुलतिलक व्रजजीवन व्रजकाज ।
व्रजवल्लभ व्रजवल्लभी व्रजवल्लभ व्रजराज ॥ ९२ ॥
रानी राधा हरि सुमिरि कीनी देव प्रकास ।
भाव सँयोग वियोग दश दसा सु सप्त बिलास ॥ ९३ ॥

इति श्रीरबिलासे कविदेवदत्तकृते सकलवियोगदशावर्ननो नाम सप्तमोविलास सम्पूर्ण: ॥ ७ ॥

सूचीपत्र ।